

बुद्धिबद्धिपा

अंगोरा गुंजन

### अपना दिस सँ इएह जे :

□ ई नाटक मैथिलीमे उपलब्ध रंगमंचक परम्परासँ फराक शोकक युगीन आवश्यकता आ' तत्त्वत्व प्रसंगवश प्रथम धेर चौबटिया-जैलीमे लिखल गेल अछि । सातकालीन भारतीय भाषा, मुख्यतः हिन्दीमे चौबटिया नाटक विशेष लोकप्रिय आओर सार्थक विधाक रूपमे अपन सामाजिक भूमिकाक निर्वाहमे महत्वपूर्ण स्थान बना लेलक अछि, जखनकि मैथिलीमे एहि प्रकारक कोनहुँ उच्चावच नहि । यद्यपि एकाधिक जगहक नाटककार मैथिलीमे कथक स्तर पर कार्यरत छथि परन्तु रंगमंचहिक परम्परा-परिधिमे घेरावल बा जे' कि आशुक रंगमंच मैथिलीमे वड़ पछुआवल ते' बहुलांग प्रभावहीन जकाँ अछि । ते' चौबटिया-नाटक जैलीमे रचल गेल ई नाटक । यद्यपि एकरा प्रस्तुत करवामे लगबगला समय, अवधिक वृद्धिमें देशी छैक तबापि एकर सम्पूर्ण कथ्य आ प्रस्तुतिक मौली तेहन सहज, सुलभ आ लोकग्राही बनाओल गेलैक अछि जे थिक ई चौबटिया-नाटक मैथिलीमे पहिल प्रयास । एकर एवकहि टा मामूली लन सीमा छैक जे एतेक टा नाटक कोनो चौबटिया पर डाढ़े-डाढ़ देखवामे दर्शककेँ किछु दिक्कति भऽ सकैत छैक । मुदा यदि पूर्ण तैयारीसँ एकरा प्रस्तुत कयल जाएक त' लोक देखबा लेल वाछय भऽ सकैत अछि ।

□ फराकतें कहबाक आवश्यकता नहि जे चौबटिया नाटकक मूल विशेषता एकर युगीन कथ्य आर सहजहि सुलभ प्रस्तुति योग्य होयब थिक । बिना कोनो लम्फ-लम्फा, बिना कोनो अतिरिक्त प्रसाधन, बेश-भूषा तथा मंच-व्यवस्था केने, बड़ सरल आ' धीइ व्यवस्थामे नाटक-तैयारी कऽ कऽ ओकरा



बाट पर, बाजार जाइत कि कार्यालयमें घर घूरत, कि रिश्तावाला, ठेला-यला, मजूर वा चिनिया बराम आ' ताहु बेचनिहार जन-साधारण प्रेक्षक-दर्शकके अनायासहि सङ्गक कातमे, बीच चौबट्टी पर वा कोनो मुककड़ पर उपलब्ध कराओख बाटक — सामान्य जनक बीचमे अभिनीत भऽ जयवाक से विविष्ट क्षमता मुककड़ वा चौबट्टिया नाटकमे रहैत छैक ।

□ एहन नाटकक समाद सोझा-सोझी साधारण वर्गक लोक चेतना धरि अनेरे उपरि सकयामे सहजहि सक्षम होइत छैक । रंगमंच एखनहुँ संश्रान्त-ताक परिधिमे चकभाउर द' रहल अछि । मैथिलीक सेहो । ते' चौबट्टिया नाटक कला-चेतनासँ अरल साधनहीन कलाकारक तत्त्व आ तेजगर माध्यम सावित होइत जे करीब-करीब आबिक जगतमें कलाकार आ संस्थाके एक इम्मे मुक्त रहैत छैक, जवन कि सम्बद्धता एकर सङ्गक, बाजार, स्कूल-कॉलेज तथाक अन्त-सम्पर्कक बनि जाइत छैक । कम खर्चमे देशी व्यापक गंहीर प्रभाव आर कला-प्रदर्शन । सांस्कृतिक चेतनाके प्रागमिक बनबैमे सृजनात्मक गति बेवामे प्राप्ति चौबट्टिया नाटक सब लोक-माध्यम आइ कोनहुँ आन साहित्य-कला-विधा नहि ।

□ किछल ते' ई नाटक बहुत पहिनहि गेल छल । एक अभिनय प्रदर्शन समय नहि भेल छल । तकरा मैथिलीक खुवा कवि आ प्रतिभावान रंगकर्मी श्री विभूति आनन्द तथा एहने किछु गुहा, २२ ई० क अमर नाथ आ जयन्ती समारोहमे अंजलि वर्मा, आनन्द मोहन, गणपति मलिक, सजल, धीरज, शंभुदेव, प्रेम कुमार, गणेश आ, अरविन्द कुमार, बामुकी नाथ आ, मन मोहन मिश्र, पद्मपति नाथ विष्णवी तथा अरविन्द कुमार वर्मा कयवनि अपना निर्देशन तथा अभिनय सँ । तदर्ध स्वभाविके त्रिक जे हम विभूति जीक आ सब कलाकारक खूब कृतज्ञ छियनि । पूर्वक नाम "चौबट्टिया पर" छल ।

□ एहि नाटकके पुस्तकाकार प्रकाशनक जे अवसर चेतना समिति हमरा देलक अछि ताहि हेतु हम हार्दिक आभार मानैत छियनि विशेषतः समितिक, अध्यक्ष तथा सचिव, डॉ० अनिरुद्ध आ तथा श्री राजेन्द्र शाक ।

□ प्रेक्षक मुद्रक श्री देवेन्द्र आ, जीक जे स्नेह सहयोग हमरा जेटल अछि तदर्ध हुनको हम कृतज्ञ छी ।

## किछु आवश्यक संकेत :

### एहि नाटकक विषयमे

□ एकर शिल्प सचकदार छैक ते' ई नाटक सोझा-साझ मंचसँ २४ कऽ चौबट्टी वा गामक भगवती स्थानमे पर्यन्त सहजतापूर्वक कएल जा सकैत अछि ।

□ पहिल दृष्टिमे पात किछु बेसी दुष्टाहत छैक, मुरा से छैक नहि । कियेक ते' पात सब सेहो दर्शकके'क भाग छैक । ते' स्थान बदलि-बदलि कऽ अथवा मंच-प्रवेश तथा वाहुर जयवाक जैसी भावसँ कथानकक अनिवा आब-

प्रयकता क अनुसार दोसर चरित्र सेहो धनि जाइत छैक । निर्देशकक तत्परता, क अपेक्षा अवश्य रहैत छैक एहिमे ।

□ ते मापूली पोशाक-परिवर्तनसँ दर्शकमे मिलल अभिनेता सेहो तेहरा भूमिका सहजहि कऽ लऽ जा सकैछ ।

□ नाटक मुख्यतः व्यंग्य छैक ते दर्शककेँ एहन ढंग कतहुसँ अखरतनि नहि, यदि निर्देशक चुस्तीसँ संवाद आ अभिनयक अलगवक निर्वाह कऽ सकथि ।

□ ओना प्रमुखतः चारि युवक, तीन आवसी, एक टा बूढ़, एक टा एक-सहआ लोक तथा साविरिया दुयेह एतये पात्रक ई कथानक छैक । यदि अभिनेता उपलब्ध नहि हो तँ ।

□ नाटक स्थानीय समस्या सभक संदर्भमे सृजित भेल अछि । उपलब्ध शैली पर संवादमे मापूली परिवर्तनसँ स्त्री अभिनेता सेहो अनायास जोड़ल जा सकैछ छैक । से स्थानीय जखन पर निर्भर छैक आ निर्देशकीय दृष्टि पर । ओना दर्शक-समूहसँ सेहो नारी-पात्र धीचल जा सकैछ छैक ।

□ स्थान-स्थान पर देल गेल दृश्यवर्णन जकाँ, दृश्य-रचना, अभिनयक विवरण निर्देशककेँ प्राथमिक सहयोग भरिक नेतसँ देल गेल छैक । निर्देशकीय दृष्टिकेँ बाधा होइक तँ निर्देशक स्वतन्त्र मौलिक दृश्य रचना तथा अभिनय-भंगिमा तैयार कऽ लेथि ।

□ ई बात निर्देशककेँ दृष्टि पर निर्भर छनि जे ओ एहि कथानकमे आवल सर्वांग कथक आओर गंभीर प्रस्तुतिक पक्षमे एहि आलेख के बिना 'विकलांग' कयने, की आ' बेहन परिवर्द्धन कऽ लैत छथि । ई करवाक हुनका पूरा स्वतन्त्रता छनि । मुदा हुनका (लिखक)सँ एक बेर एहि विषयमे गण्य कऽ लेथि—चिट्ठिसेसँ भनै ।

□ एहि नाटकमे 'मेक थप' कयल जा सकैछ आ नहियो । बेहन अवसर ।

□ तकर नाम राखल गेल— बुधिवधिया

□ ई नाटक संपूर्ण नवतुरिया

रंगकर्मी पीड़ीक नाम—

जे जन साधारणक प्रति

कएल जा रहल व्यापक गंभीर राजनैतिक

नाटककेँ जनताक पक्षमे देखार करवाक लेल

संकल्पित अछि । □



[कोनो एकटा चौबटिया । गूढभूमिमे लाउउ स्पीकर पर किस्सी गाना । संभव हो तँ “पब्लिक हँ हूँ, सब जानते हैं” । तीन विससँ आवि-आविकऽ लोक जमा भऽ गेल छैक । लोकक भौड़ जकाँ । सशक मुखाकृतिसँ बुझाइत छैक, जेना सब उत्तुक हो, जे की होइ बला छैक एतऽ । बरसक आँखि ओहि विस उठल, जाहि तरफसँ गीतक ध्वनि आवि रहल छैक । कनेक काल लोक किछु होयबाक आशामे ओहुर देखैत रहैत छैक । तखन ओहि बीचसँ दू विससँ दू व्यक्ति साधारण वेषभूषामे आगँ अबैत अछि । ओहिमे एक हावभावसँ ‘नेतागुमा’ लगैत अछि आ दोसर कलाकार जकाँ । अनेक ओ परस्पर एक-दोसरकेँ देखैत अछि । तखन पहिल व्यक्ति, जे कलाकार सन बुझाइत अछि, दोसर केँ पुछैत छैक ।]

पहिल लोक : अहाँ एतऽ किएक ठाढ़ भेल छी ?

दोसर लोक : अहाँ एतऽ किएक ठाढ़ भेल छी ?

पहिल लोक : [एँड़ी पर ठाढ़ भऽ कऽ चौतरफा देखैत] हमरा जनैत ई सब मोटय जे एतऽ एकट्ठा छथि से सब एक-दोसरसँ सहज जानऽ पाहैत छथि जे ओ एतऽ किएक अयलहे ।

दोसर लोक : हमरा जनतबे से बात नहि छै ।

पहिल लोक : हमरा जनतबे सहज बात छै ।

दोसर लोक : तँ कहैत किएक ने छिवनि ?

पहिल लोक : अहाँ कहि दिगीन ।

दोसर लोक : नै, अहाँ बता दिगीन ।

पहिल लोक : नै-नै, अपने....



दोसर लोक : नै-नै, अपने....

दोसर लोक : आह, ई कतहू होअय, पहिने पोड़ेक अपने बता देल जाओ....

पहिल लोक : बेज पहिने कनीक अपने....

तेसर लोक : [एहि बीच एकटा कबो जोरसे कहैत छैक] चल भाय, चल एतऽ स' । ई लोकनि पहिने अपने तँ पहिने अपने करैत रहलाहू आ भपटिवाहीवाली गाड़ी छूटि जायत । चल चल । [ओ जयबाक लेल उद्यत होइछ एक-दु द्वेग बड़ियो जाइत अछि । तखने पाछाँस कबो जेना सोर करैत होइ ]

पहिल लोक : ओ भाय साहब, कतऽ चलि देखिये ओ, कनी बम्हू-बम्हू । कियेक बिदा भऽ गेली ओ ?

[जाइत लोक ठमकि जाइत अछि । घूरिकऽ देखैत छैक । तखन पहिल आ दोसर लोक एक-दोसरा के देखैत अछि जेना किछु निश्चय कऽ रहल हो । किछु आना बड़ि कऽ बसोक के सम्बोधित करैत अछि । पहिल लोक जेबोसँ एकटा मोचरामल कागजक टुकड़ी निकालैत अछि, जाहि पर लाल-लाल अक्षरमे किछु लिखल छैक । ओ कागज ऊपर उठाकऽ देखबैत बजैत अछि ।]

पहिल लोक : हँ वो भँवारी, कतऽ चलली वो ? बम्हू कनी । ई जे हमरा हाथमे देखि रहल छी ते कागजक टुकड़ी नै, एकटा पोस्टरक टुकड़ा छिये । एकटा बात होय बला छै । पढ़ाय कियेक लगली अपने ? कतेक घेर्य नै राखि सकै छी ? प्रतीक्षा नै कऽ सकै छी ? एकबैग टनटनाकऽ बिदा कियेक भऽ गेली ?

तेसर लोक : आर की वो ? अहाँ वुनू गोयमे पहिने अपने तँ पहिने अपने बाजल छल । जे बात छै, यदि सत्ते छै नै कहै ने किए जाइत छिये ?

दोसर लोक : विचित्र बात यी महाशय जी । ई पहिने अपने तँ पहिने अपने अहीक दिल्ली टकसालक माया भिक । कोनो कि हमरे लोकनि पहिले-पहिल पोड़े कऽ रहल छी ? वर्षक वर्ष सँ चलि आबि रहल अछि । आ एखन कतोक वर्ष टाठतँ चलत [स्वंग्य सँ हँसैत जकाँ] आ, वृक्षन रहबाक बात ? वृक्षन तऽ सबके सब बात रहैत छै, कबो ककरो बतबैत फिरै छै ?

तेसर लोक : विशेष ने धतबैत छैक । विस्तृत बतबैत छै ।

पहिल लोक : ओह, तखन भायजी एकटा बात कहल जाओ—अहाँ के महीन-बारी दरमाहा कते टाका भेटिये आ, बाइली आमदनी कतेक अछि ?

तेसर लोक : [तमसाइत] विचित्र बेकूपी बला प्रश्न । एकवम मारि खाय बला गथा करैत छी, अहाँ लोकनि । बीच बीचट्टी पर ठाढ़ कोनो भल-मानुष लोकके अहाँ लोकनि बेजबति करैत छियेक । ओकर बाइली आमदनीक हिसाब पूछै छियेक, ठीके मारि खाव बला कार्य....

दोसर लोक : जरूर मारि खावबला कार्य करैत छी । किएक तँ अहाँ सब लोकक समाजमे रहै छी । दुर्भाग्यसँ कनी पड़लौ लिखल छी—दू अच्छर । अहाँ नहियो कहैत छी तँयो अहाँ समक गुप्त बात के बुझि जाइ छी । मारि खाव बला काज तऽ करिसे छी । कियेक तँ अहाँक बुधिमधिया सब ने बुझि जाइ छी । [तेसर लोक क्रोधे लाल भऽ जाइत छैक ।]

पहिल लोक : अच्छा जाम दियो । ई कइ जे अहाँ अपन दोसरकी सारिसँ विवाह कहिया कऽ रहल छी ? [तेसर लोक अश्रुत तामसमे ओकरा लग पहुँचि जाइत छैक, ओकर कुरता पकड़ि सैत छैक आ जँच स्वरे बजैत छैक ।]

तेसर लोक : सार, बदमाश । एको रती बजबाक विघ्नाचार नहि । बेहुवा नहि तन । हम तोरा अदालतिमे डाढ़ करवाकऽ छोड़थ । मान-हासिक भोकदिमा कऽ कऽ । एतेक रास लोक हमरे भवाही अछि । एतेक लोकक बीचमे तो हमरा अपमानजनक कया कहलऽ अछि । हम तोरा कोर्टमे ठाढ़ करव सार ! लोकके चीरिहकऽ बाजल करऽ । जने तऽ जे हम के छी ? एखन तोरा बुझल नहि छऽ । बापक विवाह पितिया सगाइ देखा देलापर बुझबहक । अरिचि चीरिह कऽ... । [वुनू गोयमे एहि क्रोधित तेसर लोकके देखैत छैक । मुदा बराबल नहि अछि । दोसर लोक कहैत छै ।]



दोसर लोक : व्यक्ति चीन्हकऽ ! ठीके तँ ! अपनहुँ लोक खेगीक लोक छिये ? [स्वयंसे] पुनः रहस्य खोलबाक उपक्रम करैत जकाँ] बात अपने जनैत छिये, सँया एतेक रास लोकसँ नुपय छी । अहाँ के खूब बाइली आमदनीयों अछि आ अपन तेसरकी सारि सँ सेहो, एएहू दु- तिर बितमे जियाही करऽ जा रहल छी । परन्तु लोक सबसँ नुकबैत छी । आ हम मुपत कहे छी तँ मोट गलासँ धमकी दैत छी । अहाँ भोम्हासँ छी ।

तेसर लोक : हे देख ले...हे खबरदार, चीन्ह-राखऽ... हमरा...

दोसर लोक : हँ हँ, एएहू ने कहू जे अहाँक कला सम्बन्धी पुलिस विभागाक बड्का आफिसर छथि तँ भिल्लों सम्बन्धी उद्योग विभागाक मंत्री छथि...अपनेक समधि कदा श्रेयक एम० एल० ए० छथि, हुनका मुख्यमंत्री जी प्राणोर्ष वेणी मानैत छथिन । एतेक धरि जे कखनो यदि अपनेक समधि के लम्बी लागि जाइत छथि आ दुइयो भिगटक खातिर ओ डाइ-रुमसँ बाहर चलि जाइत छथिन तँ...

पहिल लोक : [बीचहिमे] मुख्य मंत्री जी आमुक-ब्यामुक भऽ कऽ ताकऽ लगैत छथिन—“नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे दूँ दूँ रे साँवरिया ! विमान-विमान रटते रटते हो नष्ट रे साँवरिया....” मुख्य मंत्रीजी सस्वर गावऽ लगैत छथिन । गावि-गाविकऽ ताकऽ लगैत छथिन—नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे दूँ दूँ रे साँवरिया। [हुनू गोठय मिलिकऽ ई गीत, अपन-अपन बहिना हाथ कान पर बऽ बागा हाथ तिरछा कऽ कऽ ऊपर बिस उठौने गावऽ लगैत अछि । गीत करीब एक भिगए धरि चलैत रहैत छैक । कि तावतहि भीड़के जोड़ैत एकटा व्यक्ति प्रवेश करैत अछि । ओ छापीक परिधाना चुनौ पहिरने अछि आ काज कएल बेलवार कुरता । तकर नाम साँवरिया छैक]

साँवरिया : साँवरिया के बजा रहल छी ? एएहू छी हम । हम आवि गेलौं । हम आवि गेलौं । की बात छैक ? हम तँ बीड़ी बीनैत रही कि मोहर गुरीलगर अखाज टेकल कानमे आ हम लत्ते-फाँते बीड़िकऽ आवि गेलौं । हमरा चुनल अछि जे हम भिल्ली

गीत जहाँ लोकप्रिय छी लोकमे । स्मरण करितहि उपस्थित भऽ गेलहुँ । हमरा कानमे तँ खासी लता मुँ गेसकरक आवाज पड़ल ताकम । उपस्थित !

दोसर लोक : उपस्थित छी तँ कूकू चूहि वृत्तमाधवजी ! हूँ बाबू भेल ! एकटा फिल्मी गीतक पाँती पर अपर्याप्त दीङल चल अवलाह । कोनो काज-बंधा नहि छऽ ? [अन भरि रुकिकऽ] अथलीहँ तँ एतऽ अपनेक स्वागतक कोनो तैयारी नहि अछि । गेल जाओ, मुख्य मंत्री जी ताकि रहल छथि । ओतहि जाव । [साँवरिया मुँहमे बीड़ी लगवैत अछि आ रुष्ट जकाँ वाजऽ लगैत अछि]

साँवरिया : काज-बंधा ! की, जनताक कोनो बिरह गीत पर जनताक बीचमे सुरत उपस्थित भऽ गेलाव कोनो काज-बंधा नहि भेलै ? [सोचैत फमे] आ' मुख्य मंत्री जी ? ओ तँ विल्ली गेल छथि ।

दोसर लोक : विल्ली गेल छथि [किछू चिंतित जकाँ होइत]

साँवरिया : हँ हँ ! एहि हफतामे दिल्ली कहाँ जा सकल छलथिनहँ । आइए तऽ भोरे रेडियो कहलकैये । हँ, आइये त' । हमरा विलकुल नीक जकाँ स्मरण अछि । रेडियो कहने छल जे कोनो प्रार्थना-सभा करऽ गेलाहए । ओम्हरेसँ चल जयता बम्बई । ओतऽ हुनका अखिल भारतीय पुँजी विकास संघक अध्यक्ष से भेंट करवाक छनि ।

दोसर लोक : अच्छाऽ !

साँवरिया : हँ ! [अपने पर मुग्ध होइत] रेडियोक बात तँ हमरा तुरंत कंठस्थ भऽ जाइए । एकदम ओही छन । कणतुसँ किछू पूछि लियऽ । [दर्शक बिसि देखैत, जेना प्रशंसाक अपेक्षा करैत अछि] कंठस्थ अछि ।

पहिल लोक : जेना आइ की सब वाद कयलीहँ ?

साँवरिया : आब सँसे देस भरिक १९०५१ छोड़-पैच सभ अस्पतालक रोमीक विषयमे, ओकरा परिवार बला सभक वास्ते नित्य दिन स्वास्थ्य चुलैडिन जारी कयल जयत ।



दूसरी एक गोटा : [उत्ताह मे] की कहलिये ! तब अस्पतालक ? राजनगरी अस्पतालक भाय साहब ? हमरो आप दुखित छथि कएक दिनस ! तखन तऽ हुनको बिषयमे छपतनि ? [जेना निश्चित होइत] कतेक पैघ बि-ता सतम भऽ जावत जे बाबू नीके छथि । हमरा तँ मलिकवा छुट्टीए ने दैए जे जा कऽ एक बेर देखियो अविविधनि । [एक क्षण चुप रहि साँवरिया के पुछैत छैक] की यी आव सब रोगीक समाचार होअ लगल रेडियो पर ? गरीबो-गुरबाक....?

साँवरिया : तखन की ? रेडियो बजलए । [ओकरा डेडैत जकाँ] हम कि कौनो अपना दितत गड़ि कऽ कहि रहल छिबऽ सोरा ? [आ तखने बीबाहिमे जेना चिन्तित होइत कहऽ लगैत छैक] 'हे प्रभो ! बड़ अनर्थ भऽ जेत ! अन्हार ! महान्ध-कार । हे ईश्वर एतेक पैघ राफ्ट पर एतेक पैघ अन्धकार ! [क्षण भरि चुप रहि कऽ] हमरा लोकनिक एतेक पैघ महान नेताक, एखन एहन समयमे, देशसँ छटि जायव... ओह, हमर तँ हृदय टुकड़ी-टुकड़ी भऽ रहल अछि । [जेना मून्धमे बीबाइत] अन्धकारक एक महामुद्र ! कारी महान्धकार....

दोसर लोक : केहन अन्धकार बंधुवर ! अहाँ बड़ ब्याकुल भऽ गेलौ । बिता स्थिर कर । एकटा बीड़ी लेसि लियऽ । संभव छै....संभव छै जे....

साँवरिया : किछु संभव नै छै एतऽ (भस्तेनाक स्वरमे) एतऽ एखन देशक एतेक रात लोक उपस्थित छथि मुदा एक भीरे जारी कएल गेल बम्बे अस्पतालक बुलेटिनक बारेमे एकटा पब्लिक प्रार्थना कऽ कऽ अपन एहि नेताक रोगी गरीबकेँ दीर्घायु वनववाक प्रार्थना नहि कऽ सकैत छथि । धिक्कार ! एक हजार बेर धिक्कार अछि । बन्दा-बेहरी फल-फल-हरीक तँ कवा फराक, एहन महान आत्माक प्राण रक्षाक लेल हमरा सब प्रार्थना तक नहि कऽ सकैत छी । (वर्शक केँ) भावा दिल्ली, समाचारक अखिल भारतीय सूचीमे एकहु बेर अपना झहरक नाम आवल ?

दूसरी एक गोटा : कियेक नै आवल ? एतऽ तब उद्योगपति लोकनिक सम्मेलन जे भेलए, तकर ?

साँवरिया : अरे नै की भोड़मल जी ! हमरा लोकनि आन परम प्रिय नेताक बीबी बड़पत्नी लेल—महान नेताक बीबी बड़पत्नी लेल प्रार्थना कयलहुँ ? कस्तहु ? नागरिक प्रार्थना ? सास समुद्र पार अमेरिका-इंगलैंडसँ प्रार्थना तथाक समाचार पनायन आवि गेलैक...आ हमरा लोकनि....! हम पूछै छी, कस्तहु प्रार्थना नहि कऽ सकैत छी ? ठामहि बजरंगबलीए लोक मंदिरमे ? वा कस्तहु जाने ठाम ? इतिहास मापी देत ? कहियो ? ओ तऽ पॉलिटिक्स नहि छथि, तबक उदय होइक तकरे लेल ओ अपनाकेँ हीम करैत-करैत आइ एना छथि !

किछु वर्शक : हैं, हैं, करी । लगले प्रार्थना कैये जी । बहिक हमरा लोकनिक प्रार्थना अछि जे अपने क्वा कर एहि प्रार्थना-सभाक समापति बतियो [वर्शक साँवरिया के कहैत छनि]

साँवरिया : [ओहि आग्रह के मोजर नहि बैत जकाँ] समय तँ ककरो बाट नहि देखैत छै । कस्तहु ओ समयक निर्णय भऽ गेल आइ ? ई सप्तर गरीबे कस्तहु कालक कजर बनि गेल तँ प्रार्थना कोन काजक ?

किछु वर्शक : नहि-नहि । विशंब कियेक ? मैये जाय । [पूछबुझिसँ देव द्वारा एक स्वरमे गीता पाठ, एक स्वरमे बाइबिल, एक स्वरमे कुरानगरीक, एक स्वरमे बुर्गा सप्तसती तथा एक स्वरमे हनुमान चालीसाक पाठ ध्वनि । ओहीसँ स्वर उभरैत अछि जेना आकाश दिसत ] जेसी लोकक चेहरा, अछि ऊपर बिस टाँगल जकाँ ।]

एक टा बड़ स्वर : [दुःखताह परन्तु भारी] भाइ, प्रभो ! छहरबेवाली तँ चालू कात बनि गेल अछि, तकरा पर नोकगर-नोकगर काँचक टुकड़ी सभे सिमेंट बऽ कऽ भजगूत कऽ देखेबाक योजना छल । पूनसँ थक-नक कऽ मन माफिक बीरवा सेहो कहाँ सकलहुँ । अगल-बगलमे करोड़न आ बुकलिपडक



मन जाति का सब रोपवाक छल । तहि रोपवाक सकलहुं  
फूल-फल सब । प्रणी ! एहि बुझी आ' हताश समाज के,  
आस्था टूटल निराश समाज के' एखन किछु वर्ष हमर  
सेवाक आर आवश्यकता छलैक । भगवान! हम अंतिम  
समय मे गरीब समाजक किछु आर सेवा करऽ चाहैत छी,  
ईश्वर, हम एहि समाजक वास्तविक कान्तिक नीब पपका  
कइए कऽ ई शरीर त्यागऽ चाहैत छी ।...

पहिल युवक : ( बीचहि मे ) धाकत नहि बनू । बहुत दिनसँ ई गहर  
निराहार अछि ।

दोसर युवक : एकरा बेहू पर एक बीत बरस नहि, एकर अंग-अंग  
उधार अछि ।

तेसर युवक : वृषु जे ई गहर सुखावल गंगाक पार अछि ।

पहिल युवक : नहयना योग्य नहि ।

दोसर युवक : पीडाक योग्य नहि ।

तेसर युवक : नरुम कि धान किछु उपजवना योग्य नहि ।

एकटा बर्षक : (किछु आगो बढैत) अहाँ लोकनिक परिचय बिद्यार्थी !  
बोली बड़ साफ अछि ? कोन आश्रम छी ? नीक बाजि  
लैत छी ।

पहिल युवक : जी हैं । हमरा लोकनि पूर्व जन्मक पूर्वहि जन्मसँ नेता-  
निरीक वृत्ति करैत आबि रहल छी । हमरा लोकनिक एक-  
एक जन्म पाँच वर्षक होइत अछि । कतेक जन्म भेलै,  
जोड़ि लेल जाओ । पूर्वहु जन्मक पूर्व जन्म सँ हमरा नस-  
नसमे नेताक बास अछि । अस एतमे वृत्ति लेल जाओ जे  
हमर ई शरीर नहि, पूरा विधायक-सिवांग अछि ।

दोसर युवक : सत्य के सूत्रा अहाँ सोसि कऽ, ओकरा द्वारा नवहाक बोली मे  
लोक सब के प्रसिद्धित करवाक हमरा लोकनिक खानदानी  
पेशा अछि ।

तेसर युवक : ( ओहि बर्षाक सँ पुछैत ) छोड़ू ! अछि कोनो बारवार  
आ कि कोनो सत्य अहाँ सग ? तऽ दिख । पुरात ओकरा

सूत्रा बना बैत छी । नवहाक मुँहे नैतिक आचरण पढ़ा कऽ  
देखा दैत छी मिमटे भरिमे । (बुढ़की बजबैत अछि मंचारी  
सब बला । ओकर एहि प्रस्ताव पर दुनू लोक अपन-अपन  
बगनी हथौड़े । फेर निरिच्छन्त भऽ जाइत अछि आ'  
पहिल लोक बजैत छैक]

पहिल लोक : रच्छ रहल ! हमर सत्य पहिनिहि सूत्रा बनि गेल ।

दोसर लोक : आ हमर सत्य धाकि हारि कऽ निसभेर नूति गेल ।

पहिल युवक : [बोचहिमे जेना पुछैत छैक] भाय साहब धड़ीमे फते बाजि  
गेल ? [जेना सभ जयबा लेल, अपना अपनी कऽ उछत भऽ  
उठैमे एक आध चलवाक उपक्रम करैत अछि । दोसर लोक  
बुधियारीक संग ओतऽ तँ चलि जाइत छैक]

पहिल लोक : हाँ, हाँ ! किएक जा रहल छी भायजी ? देश-दशा  
पर एक रत्ती विचार केने जाउ । भारतेन्दु बाबू....  
गिबीपट्टी बना नहि, काशीक भारतेन्दु बाबू क्षित्री-कवि,  
कहि गेल छथि [सस्वर]

आबहु सब मिलि रोबहु भारत भाई,  
हा हा, भारत दुर्दशा न देखी जाई ॥

[पुछभूमि सँ जेना ककरो अति आतं भऽ कऽ कन्धाक स्वर  
सुनाइ पड़ैत छैक । आ पहिल लोक बोहरबैत छैक]

हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई  
आबहु सब मिलि रोबहु ....

दोसर लोक : [ किंचित बेस परिवर्तनक संग प्रवेश करैत कहैत छैक ]  
तँ कानऽ बाबू जोर-जोर सँ, छाती पीकि-पीटि कऽ  
कानऽ लागू जे जनता के बुझल भऽ जाइ, भारत दुर्दशा  
मे अछि आ तखन फेर जनता सेहो हँस बना-बना  
कऽ हाथीच करऽ लागव जे हा हा भारत दुर्दशा....

पहिल लोक : तऽ की हम गलती कहि रहल छी जे भारत दुर्दशा  
अछि ?



दोसर लोक : हे पब्लिक के भोतियवियो नहि । कहि देत छी । भ्रम नहि पसार लोकक मनमे । जेन छिये भ्रम पसारव सेहो बंझनीय अपराध होइत छैक ?

पहिल लोक : एहिमे भ्रम पसारबाक कोन गण उठा देखियै अहाँ ?

दोसर लोक : तँ अहाँ हाथमे हरिवंशक पोथी उठा कऽ कहू तँ जे ई कविता, भारतक दुर्दशा बला गण्य भारतेभु कवि अंगरेज बहादुर सँ जे देशतवाह छल ताहिपर लिखने आ छपीने रहब कि नहि ? जखन कि आव ककरी सँ ई गण्य नुकायल छैक जे अंगरेजका सब अहाँके स्वतन्त्रताक मुकुट पहिरा कऽ अनसन सहिना चल गेल एतऽतँ, जेना कोनो महन्ध रामलीलामे हनुमानकेँ मुकुट पहिरा कऽ मंचपर सँ चलि जाइए ! अंगरेज तँ अपना देश कहिया ने बुझि गेल खंडन । कतऽ सूतल रहै छी यो महाशय ?

पहिल लोक : के ह्म कि अहाँ ? सूतल के छल, कि अछि ? की सरी चलि गेल अंगरेज एतऽ तँ ? [हँसो करैत जकाँ] आ कि, भारतक दुर्दशा कि अंगरेज सब कऽ कऽ गेलैए ? उठासक हरिवंश ? अहाँ कहू तँ एतेक-एतेक वर्षक भारते ओ कि लोकक हिमायत दुर्दशा कऽ कऽ चलि गेलै ? बूझि पड़ैये जेना दुर्दशा उत्पादनक बढ़का-बड़का शल-कारखाना बैसा कऽ चलि गेलै ओ सब ।

दोसर लोक : [सोखैत जकाँ] हँ यी ! आ आब एहि दुर्दशाक हमरा लोकनि स्वयं अपने जिम्मेदार छी ।

पहिल लोक : मुदा अंगरेज लोकनि जे अपन किछु गल्ल-सन्तान छोड़ि गेल छथि एतऽ । ओ लोकनि आव अपन अपन केस के कारी करबा कऽ आँखिक पुतरी के कारी बगवाकऽ आइ हमरा सबक दुर्दशा नहि करबा रहल छथि । बेचारी जनता जे लुच्छे हिन्दी या देसी भाषा माय बनैये, एको दसी बूझि पाबि रहल अछि अपन दुर्दशा ? अपना पर

होइत एहेन-एहेन बिपत्ति, तकलीफ आ अत्याचार ? दुर्दशा ?

दोसर लोक : [खोसाइत जामे] दुर्दशाक अर्थ की होइत छैक ? की माने दुर्दशाक ? जे सब भेल, एक टा कोनो घबरा छीख सेलहुँ आ लगलहुँ घोर—दुर्दशा ? बुझिबा कोनो जबाब छैक ? [जेना पहिल लोक के आँखिन तौलैत] एखार पड़ैत छी ?

पहिल लोक : नहि ।

दोसर लोक : नहि । देखियो सुनैत छी ?

पहिल लोक : नहि ।

दोसर लोक : नहि । फिल्म देखैत छी ?

पहिल लोक : नहि ।

दोसर लोक : नहि । तखन तँ कनबे करब—हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई । इएह परिचिति अछि । सूचना आ जन-संचारक सब डा उपलब्ध साधन, तकरी सबसँ कटि कऽ रहब अन्हरी मायक अन्धो बंधन बनल आ समय अवकाशपर एहिना श्रुत-साद जनता के मति मारि कऽ ओकर बाट भोतियवैत रहब । कहियो सोचबाक काट करैत छियै जे अहाँ लोकनि जनतामे कतेक भ्रमजाखी पसारीत छियै ? दुर्दशा हुँह । अरे दुर्दशा छै तऽ बन्ध कऽ लियऽ, के रोक्कैये ? दुर्दशा....

पहिल लोक : की भ्रमजाखी यो ? की ? दुर्दशा नहि छैक ।

दोसर लोक : दुर्दशा छैक तँ बदलि ने लियऽ । दुर्दशा-दुर्दशा चिनियाइत रहने तँ नहि हएत । इएह हालति अछि अहाँ सब सन पड़ल निखल सग देखाइत लोक सबक, एहेन अवंड गैर जिम्मेदार लोक....

पहिल लोक : गैर जिम्मेदार नै अरोजगार कहियो बेरोजगार । सत्यता के किबेक बदलि दैत छियै ? सरकारी नोकरीक लेल



समस समानता। भाव आभिलषित क्षीर में मरल माल  
सकल कर्मों में हमरा सभक भविष्य....

दोसर लोक : अम्हू। राष्ट्रीय प्रगति आ' उदयानक विषयमें किंचितो  
सामान्य ज्ञान नहि अछि अहंकि। भ्रिणकार ! कतेक  
जन्मका बाल ? सामान्य ज्ञानक एहन अभाव ?

प्रथम एक गोदय : अपने ज्ञान दाँटल कि आय ?

दोसर लोक : हैं यी। भ्रिणकार, पखन कि जन-जन के सामान्य ज्ञान  
देवाक वास्ते सभटा सिनेमा हालमें बढ़िया। कोटी देखयवाक  
एतेक सुन्दर व्यवस्था कएल गेल छैक। प्रगति, आर  
धरिण सभटा उपलब्धिक समाचार-वितरण, विलक्षण कोटी  
सब नित्य दिन देखयवाक सरकारी प्रबन्ध फिट कसल  
गेल छैक। कोसहु सिनेमा हाल में तीन बज्जीसँ लंड भी  
पज्जी, कोटी सिनेमा में जाके व्यवस्था अछि कएल  
गेलैक अछि। सभ टा प्रगतिवादी विकास-कार्यक एक  
सँ एक आकर्षक कोटी सब... जनताकेँ ज्ञान बढ़यवाके कतेक  
खर्चा छैक सरकारके प्रतिनिध... ? फेर एतेक राम अंधकार  
सभ....

पहिल लोक : [असोद्य जितासाक स्वर] ऐ यी, ओ जे सिनेमा सबमें  
जे बढ़का-बढ़का हरियर-पीयर सभका सब देखाबोल  
जाइत छैक आ तानिपर एक टा हथकड़ा छड़ी से घुमेत  
रहैत छैक आ पाछाँ तें घुरीलगर गुहसँ कोनो छोड़ी  
रुचि-रुचि कड बर्तैत रहैत छैक जे पत्ता आन्ह बन्हा सेई  
आन... अकर उद्बोधन किपाई सँदी...

दोसर लोक : [आह्लासित होइत] विस्फुल्ल ? विस्फुल्ल ! तँह ।

पहिल लोक : तँह सब ते ? जाहिमें कए-कए मोनक पट्टा अपना  
अपना पीठ पर लदये देवत पर नाक रखैत जकाँ  
पामे पसीने लहायल सैकड़ाक सैकड़ा गजूर सब गाल  
गाड़ीक सैकड़ो डिब्बाने बोझा सब लदैत रहैत छैक आ  
देखि-देखि कड मोने मोन धड़ हलित होइत रहैये जे आय

अपना देशमें अक्षिण-पूर्वक जाइत-गहुँत-उपजइ खानल ?  
बाहू रे बाहू ! एतेक राम अन्न ! अपना देशमें ?

दोसर लोक : हैं हैं। तँह फिल्ल....

पहिल लोक : भाय साहेब जी, से ई फेरकी-बाजपाड़ी कतऽ पहुँचावऽ  
जाइत छैक तब टा अन्न ? कोन गाम कऽ ? [सबके देखैत  
पुछैत]

प्रथम एक गोदय : जानता ब्रियगाय ! हमरा नहि वृत्तल अछि। [फहैत ओ  
पहिल दोसर लोक फेर आनके देखैत छैक एहि आशासे जे  
कतहु ओकरा सब में नेपथरी-वृत्तल होइक]

प्रथम दोसर गोदय : जनी मयल, हमरो नहि वृत्तल अछि। हम तँ चाहिये  
संश्लेषी दोकान पड़ीये रहिये तँ कोटाकला गहुँतकी जे  
इस मासका राशन वहीँ आयो छै ।

प्रथम एक गोदय : बाहू-बाहू, पहिलो मास तँ सँह कहिकऽ पुरीये छलिये—  
इस मसल का राशन....

दोसर लोक : [छोँकाइत जकाँ] बस धऽ लेली एकटा भौड़ह। ओ  
बाजपाड़ीक सब टा अन्न देवेमें रहैत छैक कि कोनो  
आरथे दना देल जाइत छैक ? एतना सोचवाक  
विषय नहि ?

प्रथम एक गोदय : भाय साहेब, कोन जिलाने छै से देश ?

दोसर लोक : श्री बृद्धि, देश ! देश ! हुँह ! भ्रिणका जेहे जिलाने  
देश होइत छनि ! एकटा देशमें असंख्य जिला होइत  
छैक। एतना देखै छैक।

प्रथम दोसर गोदय : तखन तऽ हमरो गाम देशमें भेलै ?

प्रथम एक गोदय : कोन गाम रहैत छी ? माने जे भ्रिणका कतही-कतही तँ मे  
नईये ?

प्रथम दोसर गोदय : (उदासक जकाँ) अरिषक जयपन्त ठाकुरक....

प्रथम एक गोदय : देशमें आहूँ अछि ।

प्रथम दोसर गोदय : से कियेक ?



क्यों एक मोटय : देखाने बीच-बीच में प्रवेश टा छवि । कम से कम  
मंडी रहूँ नकले नाम या देखने भिन्ना कएल जाइत  
छैक ।

क्यों दोसर मोटय : तखन ?

क्यों एक मोटय : इएह भाइ आशेव कहताह । [दोसर लोक से गुछैत]  
भाय साहेब एतेक राख मालगुड़ीके छिन्वा सब, चाउर  
गहुमसे कतक वास्ते कमाइत छैक ?

दोसर लोक : सही लोकनि मछि कपार बसा व्यक्ति बुझा रहल छी ।  
कुच्छे अभी टा होइत छैक जीवनक लेल ? इनारक बेंभ  
नव ।

पहिल लोक : तखन कभीक लेल आर ?

दोसर लोक : कल फारखानाक लेल बड़का - बड़का विशाल प्रोजेक्ट  
नव...परमाणु ऊर्जाक प्रोजेक्ट...तखन युरेनियम उपजयवाक  
भारी प्रोजेक्ट...

पहिल लोक : परमाणु ऊर्जा या युरेनियम की होइत छैक भाय साहेब ?  
उपजा बड़वे वास्ते खेतने जे सुरिया खाद जकाँ देल  
जाइत छैक सैह की ? ई युरेनियम की होइत छैक ?

दोसर लोक : ले । धन बूझि छऽ ही । युरेनियम की होइत छैक ?  
[बाक कात अरमन(पुर्वक देखैत फेर पहिल लोक पर  
केन्द्रित होइत) युरेनियम खाद होइत छैक ? हह !  
[मुनः सबके बेसीत, दर्शके भे से ककरो सम्बोधित करैत जकाँ]  
विज्ञान एतेक उत्तति कऽ गेल । इएह देखल जाओ  
जे चन्द्रमा-सूरज पर चढ़ि गेल । या तोरा एतथो महि  
बुझल छऽ जे युरेनियम की होइत छैक ? धिक्कार  
कहवाक चाही !

पहिल लोक : महिने धिक्कारै किएक छी यी ? नहि बुझल अछि तेँ पुछैत  
छी । बुझा दिअऽ ।

दोसर लोक : [ओकरा पर छुपापूर्ण मज्जरि देत दर्शक केँ कहैत छैक]

आम नादेखीकनि, जगमे लोकनि मे सँ एतऽ कबो खज्ज  
विज्ञानक विज्ञान छी ? [फेर केला तरफाल अपन मलतो  
गुधारेत] अरे, माक खरव । भला विज्ञान, एहि चीबटिया  
पर की कऽ ओताह ? ओ तेँ अपना झाड़ंग—खसो  
गवगर विज्ञान पर समझमे ओगठल अनुका एखवार  
बढ़ि रहल हैताह । वा संभव जे गहरतेँ बाहर नेल  
होनि कोनो पीएच० डी० डी० लिटल भाइभा लेबऽ  
निवेन्ड्रम वा दिल्ली - विदेश मंत्रालयमे विदेश यात्राक  
कोडी नमबऽ । [स्वयं सेँ] भला एहि अरम्य भौड़  
भाइक चीबटिया पर विज्ञान की कऽ ओताह ?

पहिल लोक : ते की भाय साहेब ? केहन भौड़ी यी ?

दोसर लोक : हँ यी साय भौड़ी छैक । कोनो एक टा ? [अधिक  
चुप्पी] एहि चीबटिया पर अरम्य भौड़-भाड़मे ओ किएक  
ओताह ? [किंचित चिन्ता करैत] दोसर जे, एहि भौड़-  
भाड़ मे बाकिट भार आ उचकथी लोक सब तेँ रहैत छैक ।  
चीबट्टी तेँ तकरे लोकनिक !

क्यों एक मोटय : (क्षीय तेँ) हँ यी हमरा लोकनि अरम्य छी, उचकथ  
छी, जे कबो एहि चीबटिया पर ठाढ़ छी ?

दोसर लोक : [अपन शान्त जोड़ैत] निरपेक ओताह ओ एहि चीबट्टी पर,  
जतऽ सब छैक छोमना खाना, खिजाकथा, छोड़लिन  
शोकानदार, देवल लोक वा अपना ओफिसमे पुरैत  
किराती मुंजी लोक वा कोनो इन्टरव्यूसे निराश हवाक  
पुरैत कोनो बेरोशगार एकसर बीजवान ।

क्यों एक मोटय : (चारि पड़वाक मुझमे) आर की ? चीबटिया कोनो  
जगह थिक भलमानुष लोकनिक लेल ? अहूँनी गेलए जे  
‘ओ तर नहि भिचारि थिक,  
जे चीबटिया जाय  
कोआ मजिदा छोड़ि कऽ  
झिन्नी मूरही खाए... .. (गर्जन कहैत छैक)



बोस्तर लोक : उचित ! एतः विष्णु अथै जयनाहू मङ्गल आ विद्वान लोक ? ( फेर किछु सोवैत जकाँ, मन धाड़ैत ) हँ भाय माहँव ओकनि, तँ छी वयो भोटय साइन्सक लोक जे एखन महान विद्वान कहि भेल होइ आ' युरेनियमक विषयमे किछु ज्ञानक मध्य बुझा संधी ? वयो भाय ? वयो वाप-पित्त कका-बदा वयो ? युरेनियम...

चारिम युवक : (अचानक जोर सँ) हे इएह हम बुझा पैत छी । (ओ आमाँ बड़ि कऽ अवैत छैक) हँ एखन धरि प्राप्त ज्ञान पदार्थमे सबसँ महन अछि । एकर प्रयोग तामस्त मनुष्यताक खिलाक कएल जाय नला अछि । युरेनियमक राजनीतिक व्यवहार कएल जायत । युरेनियम अवैतला मनुष्यक मनु विक । ( कहैत कहैत युवक अपन माथ घऽ लैए आ अनावत जकाँ ओतड़ि पैसऽ लमैए किछु मोटे ओकरा पकड़ैत-सम्भारैत पूछऽ लगैत छथि—को भेल को भेल ? मुदा ओ पुष्पा अचेत जकाँ भँ जाइत छैक । काहू पर सँ ओकर शोरा तसरि जाइत छैक आ जकरा, ओकरे सेवामे लगल एक भोटक, बड़ चलाकी सँ लऽकऽ एम्हर-ओम्हर देखैत तसरि जाइत छैक आ परिचरित पोशाकमे ओती-कुतमि उपस्थित होइत छैक ।)

साँवरिया : चिन्ता धुनि करऽ । नै भवइ ! तोरा किछु नहि भेलऽ हे । तोरा किछु नहि भेलऽ ...

पहिल लोक : चिन्तले मध्य भी महाशय ! ई युवक ओषड़कऽ साँवरि खनि पड़लैए । अचेत छैक आ अहाँ परमा रहल छी जे किछु नै भेलैए । समस्त !

साँवरिया : अहँ अनेरे सबराइल छी । एकरा तोरी किछु नहि भेलैए । ई युरेनियमक विषयमे सर्वत-वर्जित उपजनामे आविष्कार पड़लैए । एकरा आर किछु नहि भेलैए ।

चारिम युवक : (अचानक वाजऽ लगैत छैक) हँ हँ, युरेनियमक विषयमे । हन छीक-छीक अवसर देगे छलियैक । इन्टरव्यूमे निकलि कऽ सबसँ पहिल काज हम इएह कयौ । युरेनियमके

तकनी । आ' जे कि तोरा छैक अमेरिकीमे सबसँ बेसी भेटल । हमरे जवाब एकदम ठीक छल । (ओ एकमैत जकाँ छैक)

साँवरिया : की जवाब ठीक छल ? कोन कबालक जवाब ?

चारिम युवक : सब टा प्रश्नक उत्तर, ठीक छल हामर । मुदा ओ विद्वान सब हमरा दूतकारलक, हमर आत्मबल के छोड़ि कऽ घऽ देखक । कहलक धिक्कार ! एम्हऽ एस सी० कऽ चुकल छी कहीं, काहि कोनो काबिलमे हजारक हजार विद्यार्थी पराभव मोफेतर बनल । विद्यार्थी के की चरखे खाक-साथर ।

वयो एक भोटक : पढ़ायब कि पराभव-छी ? विद्वान साहेब की पुछलनि नरायण ?

चारिम युवक : (पाव करैत जकाँ अँधेय में बावस होइत) एहि देशमे जतऽ एम्हऽ एस सी० लोकक ज्ञानक ई स्तर अछि जे ई युरेनियमक उपयोग नहि जनैत छथि, जे बुझा सकेत छथि । लग आ जाचानमे छोड़ा-माँड़े पर्यन्त छोट-मोट आविष्कार कऽ पैत छैक ।

पहिल युवक : अहाँ नहि पुछलियनि जे एह प्रश्न संघन धरि कए आ आविष्कार कऽ चुकलियैक ?

बोस्तर लोक : इएह विक विधाक स्तर (अल्प होइत) कतेक अवगतन कऽ गेलैक छल लौकानिक ? अरे एको टा पड़ि-लिखि कऽ परीक्षा पास करै तखन नै । ओरि आ पैरवी !

चारिम युवक : (वेग सतर्क होइत) एँ यो, यहाँ कि ओहाँ इन्टरव्यू बोर्ड सँ जाधि रहल छी ? अहाँ पुछने रही ई मध्य सब ? (ओ खूब उत्तेजित सऽ कऽ ओकरा बिस बहैत छैक आ बाजऽ लगैत छैक) आ यदि अहाँ ओहि बदमासीक बदला एहि बीचही पर लेबऽ लागी ? यदि कऽ फरेवपर चढ़ि जाइ आ जोरसँ हुगचि दी तऽ वयो कानहु पला हएत एतऽ ? (जोरसँ) हमर ठीक गही उत्तर क गयनी कियैक केवऽ तौ s s s ?



क्यों एक मोहप : कियेक-तों आइ-कासिह इन्टरनयुमे सही उत्तर देख नसत  
बसत छैक ।

चारिम युवक : ( बिना सुनबहि ओकरा कहने जाइत ) नरेदी धऽ कऽ  
मोकि दिवऽ ? यूरेनियमक उत्पादन भरि संसारमे सबसे  
बेसी अमेरिका नै करेये ? ( यूसैक के जेना चिन्ताही  
बुझबैत ) अपने विवेकास कह, इह भर्त्तों कहैत छी जे  
अमेरिका एहि विषयमे बड़ खतरनाक दशास रहबैए ।  
( दोसर लोक के पुछैत ) अहाँ कियेक कहलियैक हऽ !  
कियेक कहलहुँ हमरे ठीक जबाब के ?

दोसर लोक : ( सिधरे रहैत ) थाव लिपऽ । ओ अंधु हम कतऽ नै एली  
इन्टरनयु बोर्डमे ? आ भला हम अहाँ नै कियेक किछु  
पुछब ? हम नै मान एहि धारे नहली जे अहाँ अपना  
के इन्टरनयु ओईक विज्ञान लौकिक सोझ रहि, किछु  
पैस दांत आ मोकनर नह बला जायवर तथाक थीच  
थेराफल अनुभाव कयने हुअए । ओयऽ ओ लोकनि अपन  
कुल मोचक उम्मेदवार के छोड़ि आन सब पर मुकरानीक  
मुग्यर बुझि हुड़ा लेबऽ नगैत हेवाह आ' वेज्जति कऽ कऽ  
परा ई भे मायक रहल हेवाह । अपना लोक के छोड़ि  
कऽ सब के...

पहिल युवक : हँ हँ ! हल्का छुबैक ओ ओड़िने बेयरमेनक अपने साङूक  
बेटा सेहो उम्मेदवार जर्जैत । तकरे होयवाक छलैथ ।  
तँ बुझा बात सब उम्मेदवार पर बतलू धानर जहाँ  
खबथा-खुबुआ छुटै छलैए । सबकै जीवन गंजक-कजक  
धऽ देलकै ।

दोसर लोक : तँ थऽ कहब हमरा पर तमसबवाक प्रयोजन नहि यी !  
ओही इन्टरनयु भुरतहरे कए टा भाव कए बेर ई सब कह-  
लनि हमरा... आइ ! ओही आव पाँच वर्षतँ बेरोजगार  
अछि । आ एहि वर्ष छव्वीस जनवरी कऽ ओकर  
सरकारी नोकरीक बास्ते देनेन सेहो खतम छै । सरकारी  
नोकरीक रस्ता बन्द ।

पहिल युवक : २६ जनवरी कऽ लार खान ! कनू बड़ दिव । मोक्ष  
तँ बखस्य भेटत आव । पुण्य विधिमे मरवा उत्तर मोक्ष  
धामे रहैत छैक । जास्व कहैए ।

दोसर लोक : भुरपू नहि यी । सरकारी नोकरी कयवाक बयस खतम  
होयवाक विधि । बा ताहु पर तों तँ जनिने छहक जे ऐत  
२६ जनवरी कऽ जन्म लेनिहार अपना देशक भोतो लोक  
के जखन सरकारे नोकरी नहि दऽ सकय तँ ई बड़का--  
बड़का विशास लोहा फेकरी बा कपडा-लेलक कारवाना  
बला राव कियेक दैतैक ?

( उत्तेजित युवक जेना झेल पड़ि गेल । जेना  
अफसोच करऽ लागल । ओकर मुँह लटक गेलैक फेर  
तत्क्षण ओ अचानक साथ उठौलक आ उपस्थित जन-  
साधारण के चेतरऽ लगलैक )

चारिम युवक : ई यूरेनियम ! देखबै एकर तर संहारी विध्वंसकारी  
कृत्य सब ! करामाति !

पहिल लोक : की करामाति ? ( चिन्तित स्वरमे )

चारिम युवक : देखबैक ते । हम फेरो कहि बैत छी ई यूरेनियम बहुत  
खतरनाक विस्फोटकारी कर्षा विक । एकर जे जोक  
जोगाड़ कएल जा रहल छैक ते सब टा भयानक युद्धक  
जीवार आ बलिधायक बास्ते कएल जा रहल छैथ ।

दोसर युवक : मुदा ओ लोकनि तँ कहैथ छलिन जे ई मानवीय  
विकास आ' समृद्धिक बड़ यंत्रणाक एक ठा महान ऊर्जा  
विक-बोहिन मनुष्यक अगतिक डेग आओर आगाँ धई बला  
छैक ।

चारिम युवक : हँ हँ ! कहवा-भुवनामे ते ई स्थान रहै । तँ जगैत छैक  
पबिड आ शुद्ध । मुदा ई कहन खतरनाक उद्देश्यक उपज  
विक, तेकर करामाति तँ...

पहिल लोक : ( चिन्ता आ' उद्देश्य ) ते भाव, कहबो त करव जे की  
करामाति ?



दोसर लोक : की आरम्भानि ? अहो भाय साहेव कमाले छी । अरे ई युवक एखन उभेनक कोशमे छथि । अतान छथि । नहि बुरीत छथिन जे अपना देशमे एकर एहन प्रयोग असंभव छैक ।

चारिम युवक : ( प्रोथ सँ ) केनेक ?

दोसर लोक : बिकेक ते अपन राष्ट्रीय नीतिक खिलाफ छैक ई बात । हमरा लोकनिक सिद्धान्त विश्व बंधुत्वक अछि जेकर रास्ता सत्य आ अहिंसाक छैक । अपनहि अगताक विरुद्ध भक्तहु होइक एकर प्रयोग ? अपना युष्मन्तक खिलाफ ते हमरा लोकनि कारवाइ करबे ते करैत छियैक, अहाँ लोकनिके ते बुझलै अछि...आ अपने लोक पर कतहु....

चारिम युवक : (ओकरा तीक्ष्णता सँ देखैत) एकर शक्ति हमरा सब दिस नहि मोड़ल अवर्तक ? अविषयमे ? हमरे लोकनि एकर शिकार नहि बनायल जायत ?

दोसर लोक : कथयनि नहि । ते कदापि नहि भइ सकीए ।

चारिम युवक : उवाइ धुनि । सएहु हेतैक ।

दोसर लोक : तो नहि बुरी रहल छहक युवक । ई जतना बामी होइत छैक ओतने उपयोगी सेहो । काबहुका मनुष्य, बिना एकरे मुरखिल नहि रहि सकत ।

पहिल लोक : कोना ?

दोसर लोक : एना, जे देखिमी, आर अमेरिका सब ई सबसँ बेसी खानने छैक । ओ अपन सामान सबसँ भंडार भरने जा रहल अछि । ओकर देशक सीमासि जनता पर कठिनी कोनो विपत्ति नहि पड़ैतक ।

पहिल लोक : भाय-साहेव ई कहु जे जखन ओ एहन अकरी चीज छैक तँ अपना कतऽ कियैक नहि अछि ?

दोसर लोक : अछि कोना नहि ? किछु खराबमे सेइल-ए किछु दुनियाक बेकमे कर्मा कथमे । मुदा देशक किछु ओखल मुखी बला विभक्त लोकनि एकर उगरे अरे लगैत छथि । आदरिये

छनि उगटा नीचबाद, उगटा करबाध । एहि कथके 'नीच' कहैत छथिन ! यद्यपि कि एहि कथके जेन देश बड़ पैघ मूल्य चुका रहल अछि । जे हो ! विरोधी मतके सेहो अवसर देबाध आदर्श, अपना कतऽ बड़ प्राचीन अछि । तेँ विरोधी मतक सेहो स्वागत ।

अबो एक गोटम : अपने भाषण-प्रोजेक्टक बाइरेक्टर बुझाइत छी....

दोसर लोक : अहाँ लोकनि के बुझलै हएत जे आव एक हो विज्ञान प्रोजेक्ट बनल अछि । ततेक पैघ ततेक पैघ से ओकरा ओइक सम्पूर्ण पध्दतिमे....

पहिल लोक : त की सब अवर्तक ओहि कारखानामे ?

चारिम युवक : बड़का-बड़का विस्फोटक औजार । मनुष्यकेँ धुँइ कऽ रखै बला बड़का-बड़का जाइइ । इएह सब ।

दोसर लोक : नहि यी ! ऊर्जाक एहन विराट सोल केँ ई युवक विध्वंगकारी कारखाना कहि केँ बुझा रहल छथि । ई अहाँ लोकनिके 'अनमे' शक्ति रहल छथि । झूठ कहैत छथि ।

चारिम युवक : सूट अहाँ खानि रहल छी । हम लोककेँ डीक-डीक बुझा रहल छियैक । एखन देश केँ एकर पहिल आरम्भ नहि छैक ।

दोसर लोक : देश भर अनेक प्रकारक जीतरका संकट....

चारिम युवक : एपेह तेँ थिक जनाकी ! एहि विस्फोटक यंत्रणाक पक्षमे झुट्टे ई प्रकार आ' तक कएल जाइत अछि जे देश भर कोनो खतरा नहि आवन आ' गोबे आबिबो आय तँ देशक, देशक महल जतनाक रक्षा कएल जा सकब ।

पहिल लोक : (किंचित डरामल) केहन खतरा ? कतऽ सँ के करतैक खतरा ?

दोसर लोक : आर के ? एहि दिसमे चीन, ओम्हरसँ नेपाल कऽ सकीए आ' ओहि कात सँ पाकिस्तान....

चारिम युवक : ई हँ । चीन, नेपाल आ' पाकिस्तान ! हम पुछैत छी (तोनु दिस दर्शककेँ पुछैत) अहाँ लोकनिके अछि खबर ?



दूसरी एक गोडय : जखन कि सत्य बात में ई थिक जे एहि चीनू पड़ोसी देखलें हमरा लोकनिक सम्बन्ध पारिवारिक भनि रहलए । अगिला किछु दिनों हमरा लोकनिक एका दोसरा कसब बियाह दुरागमन आ' छठिवार मुइमने चीन नेपाल, पाकिस्तान मेले आयल करब । तोहुर मई जायब मिलि जुलिकऽ नेपाल चीन पाकिस्तानमे अथन तिहार चलत ।

चारिम युवक : जखन कि एही लोकनिके अछि पता जे कतेक राम चीन नेपाल आ पाकिस्तान अहाँक आरु-गडोसमे मुकायस अछि अगले बगलेमे ?

दूसरी एक गोडय : हमरो लग ? हमरो पड़ोसमे यो ? (चिंतित जकाँ)

चारिम युवक : (गंभीर चेतोत्तक स्वरमे) हँ ! हम केर कहि देत छी जे ई तमाक बन बन्दूक दीवार बाहे बाहि बेघने भऽ रहल हो दुनियामे चाहे बाहुल भऽ रहल हो, यहुँक छाती आ' गर्दमि दिम चलि सकैम । किएक तँ जखनहि अहाँ हिनकर मत माँकिक नहि रहलियनि कि हिनका तजरिमे अहाँ कसबो चीन आ' कसबो पाकिस्तान जकाँ भऽ जयमनि जे कि अहाँ अपना अधिकार लेल ठाढ़ हएब । किएक तँ ते' हिनकर स्वार्थक विमर्श हेतुनि-अधिकार लेल अहाँक छठिकऽ ठाढ़ हएब ।

बोसर लोक : केहन मजकऽ हएब करै छऽ हो भाय ? ई राम टा तब किछु अपना देवघातिथेक बासले तँ छैक ! अपन देव धन्य अछि । संदेह जुनि करऽ । संदेह बलभाक भास करैत छैक अहाँ हा ! अपन देव ! (ओ मुख हँइस आँखि मुनित दुनू हाथ जोड़ि कपार पर रखैत कहैत छैक) अपना देव ! हमरा लोकनिके लकर राम टा सति विधि केँ थडातें देखबाक चाही ! संशयसँ नहि संशयसत्ता क्षिनमनि ...

तृतीय एक गोडय : कोनो गति विधि पर संशय नहि करबाक चाही ! आ' बाहुलरी आ' निहुरा-निरीह मनुख सब पर होइत

बंदूक आ' गोलाबारी के फूल बेसमात छोट कऽ छाती करबाक चाही, यो महानुभाव ?

बोसर लोक : (नहि मुनित सब श्रमे) अपना देवमे छटा आ' अदृष्ट विश्वास राखी । आ' निरान्त निश्चय आश्रय आँखि मूनि कऽ समाज-सेवा करैत जीवन धन्य धन्य करैत रह्यो ! ई मस्तर आ अकिंचन देह आ प्राण समाज-सेवा करैत देशक प्रतिवेदी पर अर्पित कऽ दी । ई ऊर्जा छै सेहो, फल कारखाना सेहो तँ हमरे लोकनिक बासले थिक ।

चारिम युवक : हँ, हँ किएक नहि ! एही कारखानासँ मे आर्थिक भोका-बिला कएल जयतैक ।

पहिल लोक : कथीक मोकाबिला ?

चारिम युवक : (बोससँ) आक्रमणकारी शत्रु कमसँ । जखन कि हमरा सबकेँ बाइ धरि नयो ई नहि कहलक जे आक्रमणकारी के होइत छैक ?

पहिल लोक : ई आक्रमणकारी के होइत छैक हो भाय ? आ एहि बात सँ ओकर कोन सम्बन्ध छैक ?

चारिम युवक : कहलहुँ नहि, बाहरी दुश्मन जखन देशक सीमा पर हमला करत माने आक्रमण, तँ एहि कारखानाक बगल लडाइक बीजार सबक लेल हमर सेना ओकरा खेहाड़ि कऽ सीमा सँ बाहर कऽ देलैक ।

पहिल लोक : मूला जेना कि एही लोकनिक सब सभसँ मतलब बहुराहत अछि "यदि बाहुरसँ ओ देव सब हमरा सब के घेर लिअब आ' एम्हर पाछाँक" अपने देशक भीती नेपाली पाकिस्तान गोलबारी कऽ कऽ हमरा सब के' भुजि कऽ राखि दिअब तखन ? की करब ?

चारिम युवक : हँ भायबी, अहाँ विश्वास छीक नहि रहल थिक । एहो मऽ सकैए ! बलिक इएह हएत ।

पहिल लोक : (चिंतित) तखन हमरा की करबाक चाही ?



दोसर लोक : धैर्य या' शान्तिसे' कार्य' सेवक' चाही, सदाई' सगडा' नहि' करवाक' चाही ।

पहिल लोक : ककरा न' ? लडाई-सगडा' ककरास' नहि' करवाक' चाही ?

दोसर लोक : (बुझवैक' मुझमे) आकितो' काज' करैत' होइ' त' अपना' हाकिम' तकरा' । मानमे' रहैत' होइ' त' मृषिया' सरपंच' वा' बी० डी० बी० 'से', अपना' दोलक' सेता' अर्थात्' एमेले' एम्पीस' ।

पहिल लोक : मुदा' ई' लोकनि' हमरा' सभक' अपने' लोक' छथि । ई' सब' चीज', पाकिस्तान' रूस' वा' अमेरिकाक' लोक' स' नहि' छथि' अपन' समस्या' वा' तकलीफ' कथा' हमरा' सब' हिनका' लोकनि'सँ' नहि' बहूबनि' त' ककरा' रहवैक' ? ई' त' अपने' लोक'...

चारिम युवक : [तीक्ष्णवासी] के' कहि' देखक' अपने' लोक' ? ई' सब' अवदेसी' बाहरी' लोक' छथि । हिनकर' मूल' गौर, 'पूर्वजगुस'—विदेश' मे' छनि । [सोचैत' जकाँ] मुदा' अही' अपन' दुःख' विपत्ति' हिनका' लोकनि' के' अवश्य' सुनविषु । ई' मुनि'तहि' आपन' छथि । सुनताह' । फेर' सुनताह' । खाली' सुनविषु । लडू' छुनि । हिनका' लोकनि'सँ' लडाई' नहि' करू' । हमरा' लोकनि'क' [हाथ' उठा' कऽ' जोड़ैत' आँखि' मुनैत'] नाम' विधाता' छथि । हिनका'सँ' सगडा' नहि' करी' ! [स्वंगदर्श] ।

पहिल लोक : बाहू, लड़ी' कियेक' नहि' छी' ? जखन' हमर' मुख' मुनीसाक' हस्तजाम' करब' हिनकर' काज' छियनि' त' ई' छुछै' दुःख' मुनताह' ? दुःख' कि' कीमती' बाइ' पीक' मौजरा' छैक' आँखि' परबारी' बाँध' नहुआक' तिरहुँ, से' सुनथि' आ' पान' मलीछी' मुक्ति-मुनि' कऽ' सुनथि ।

चारिम युवक : रैह' श्रुति' लिपि' । हिनका' लोकनि' के' अधिकक' दुःख' सुनि-मुनि' कऽ' आहुल-आहुल' होयवाक' यादति' छथि । आर्यभट्टन' हाँडवाक' आ, उन्नत' भंड' जयवाक' आवति'...

दोसर लोक : सै-नै ! हिनका' सबसँ' लड़ला' सगडा'सँ' की' फायदा ?

पहिल लोक : मुदा' विविध' मुझाय' थखि' अहाँक' जो' साहेब ! ई' लोकनि' हमरा' सबके' भरि' जन्म' पाँकी' दैत' रहथि, ज्ञान-पट्टी' पहँवैत' रहथि आ' हम' इहो' नहि' ज्ञान' सेवक' करियनि' जे' ओ' लोकनि' एना' किएक' करैत' छथि ? हुन' हुनकर' कुर्ताक' कॉलरो' पकड़ि' कऽ' नहि' बुझियनि' जे' ओ' किएक' एना'...

दोसर लोक : बिल्कुल' नहि' । ई' लोकनि' अहीँक' हिनका' जारो' सोचैत' रहैत' छथि । बहुत' स्वस्त' रहैत' छथि । हिनका' सबक' कार्य' बुझिनीची' कला' कार्य' छनि' नै । ई' लोकनि' हरयन' अहीँ' लोकनिक' समस्याक' बास्ते' चिन्तित' रहैत' छथि ।

पहिल युवक : हमरा' समस्याक' केत ? सेहो' ई' लोकनि' ? चिन्तित' रहैत' छथि ? (स्वंगदर्श)

दोसर लोक : तखन' आर' की ? हिनका' देशक' कौन' बाज' रहैत' छनि । सरसँ' अहाँक' ग्राम, सभास' जिला' आ' प्रान्तक' उत्थानक' बास्ते' प्रगतिशील' डेग' उठयवाक' आस्ते' सोचि' रहैत' पड़ैत' छनि । बहुत' कार्य' छनि । हिनका' सबके' यदि' अहाँ' अपने' व्यक्तिगत' समस्या' सभमे' ओझरवैत' रहथनि, अपने' 'बदली' आ' 'पोरिशन' करयवामे' खानगी' कार्य' करयवामे' ओझरी'ने' पड़ैत' जखनि' तँ' ई' लोकनि' देशक' काज' अखन' करैत' अयताह' ?

पहिल लोक : आह' भाय' साहेब ! देशक' काज' ? आ' हम' की' देशसँ' बाहर' छी' ? हमर' व्यक्तिगत' काज' भंड' जमवा' मे' देशक' काज'के' फोन' भावा' वा' हाँस' भंड' जाइत' छैक' यी ? हमर', हमर' धिया-पुताक' लीपे' जोड़त' कनैत' भीति' जाय, आ' ई' महाभूभाव' लोकनि' देशक' (स्वंगदर्श) बास्ते' काज' करैत' रहताह' ।

दोसर लोक : अहूँकि' विपत्ति' कियेक' नहि' होइए' जे' ई' लोकनि' अहीँक' देशक' काज'...

पहिल लोक : जाहि' नहि' बीन' छनि' केहुन' छनि' हिनकर' सभक' देश



जकरा वास्ते ई सब बेसीकाल बिदेशमें भीखड़ी जमाने रहैत छथि । आ तबाने अखबार सभमें अपन मुसक आ बसक छपवैत रहैत छथि ।

दोसर लोक : भू भू ! एहन बात कहीं कियेक सोचैत छी ? एहन प्रति-  
क्रियावादी बात । कियेक सोचैत छी ? कोसमें आन्दोलन नहि  
बनि जात । भीक्षुने उन्हा बात नहि नोच ।

पहिल लोक : कियेक नहि सोची यी ? भवा कहू ! की तमाशा ! ई  
उन्हा बात कै ? कारखाना बनने बेमूसराइमें आ तकर  
समसा बनबाक हमरा सबक लोक जापानमें बैसल छथि  
तू बर्दसे । बेत मठकी ?

दोसर लोक : एहिसे हर्षा की ? अहाँ कत तकनीकी ज्ञान ओतेक नहि  
बड़ल अछि । आ ज्ञान तें अपनासँ छोटकोसँ लेबाक चाही ।  
ज्ञान जतए भेटब ओतहि बड़ि अम्बाक चाही ।

पहिल लोक : छोड़ू छोड़ू उपदेश छडिब । ज्ञान छोडको सँ लेबाक चाही ।  
हम वहाँ तें पुछैत छी बल्कि वहाँ सब मोटव तें पूछैत छी  
(बर्षाको के देखैत) जे अपना कत तकनीकी ज्ञान कियेक  
नहि भऽ सकल ओतेक ? एतेक बर्षक बादें एतवो टा  
तकनीकी ज्ञान हमरा सभके नहि आयल एकरा वास्ते  
हमर बाप सोषी छथि ?

पहिल पुत्रक : अहा हा, भाष ताईब, अपना बाप के अनेरे कियेक अनंत  
छियनि एहि मे ?

पहिल लोक : न-न ! यही कहू जे हमर बा हमरा लोकनिसे किनकर  
बाप सोषी छथि एहि बातक लेल ? अपना कत तकनीकी  
ज्ञान नहि बड़ि सकरीक तें ?

दोसर लोक : जानत जानत ! श्रैरसे काज नी बाउ अमुअर । अहाँक ई  
अभियोग ठीक भऽ सकैत अछि, मुदा हमरा सभ के एहो  
तें तोचबाक चाही जे देश एखन संक्रान्ति कालमें जीति  
रहल अछि ।

बसो एक मोटव : तीन चारि दस वर्षा तें भऽ चुकल । आव कहिया धरि ई

संक्रान्ति काल रहब बला अछि यी आवैब ? हमसँ पर-  
पोताक जन्म धरि की ? हमरे बचक एतए जेन भऽ गेल  
आब । ई संक्रान्ति काल आखिर कहिया धरि जाही  
सीधत ?

दोसर लोक : हँ, हँ संक्रान्तिकालमें देश एखन गुजरि रहल-ए ।

बसो एक मोटव : तः जेना दानापुर, पसिचुर, रेलाड़ी, काशीरक बड़बा  
पहाड़ी गुफासँ गुजरि रहल-ए ।

दोसर लोक : अरे न भाय ! संक्रान्तिकालमें ! (जेना जपेसा करैत)  
ऐहन कठिन समयमें (मुलाय बैत) अपन विश्वास नहि  
नसबाक चाही । यदि हमरा लोकनि देश हितमें धैर्य नहि  
राखब, त्याग नहि करब तें देशक वास्ते के करत ? अहाँ  
अमेरिकीक स्वातंत्र्य कियेक ओतक 'स्वतंत्र-आत्मिक' स्थिति  
तें ओ देश आउ विप्लव सभसँ पैघ शक्ति अछि । हमरो  
चाय यदि 'संतोष' धैर्य आ त्यागसँ काज नहि करी तें ककर  
देश बर्बाद होएत ?

पहिल पुत्रक : छानागल अरबीक । देश ओकरे छियै । समटा सिपाहियो  
पुलिस ओकरे । राजकलक पोखानो ओकरे । आ, ई सब  
मोटव जे हमरा धैर्य राखऽ कहि कऽ त्वाभी बगल रहल  
छथि—ओहो सब मोटव ओकरे छथिन । हमर बसो मे  
अछि । हमर तें बल ई संक्रान्ति काल थिक जे सार वस्तीस  
वर्षसँ चलि रहल अछि । बीरभरी बर्ष धरि चलत । तबाने  
तें इएह अछि महान् संक्रान्तिकाल ! हमरा सब तें अजी-  
बक फेरल ओहो-बैल थिकहुं वा आगड़ि-बाएक काज  
आ छपामे...पड़ल छी...

दोसर लोक : आह, से नहि बाली भाय । समटा डीक-ठाक भऽ पार्थक ।  
बिन्हा नहि । सब हेलैक । सधमहि देशक पावन भूमि  
बद सभ किछु हेतैक देखिबो मे !

बसो एक मोटव : हँ, हँ, मोहवा बन्द करबा लेल सेलस सेल लबाओल जयलैक ।

दोसर लोक : ओह ताम्रदायिक चर्चा भुनि छडाव ! जहिना कि देश सबर  
जार्गी छटवऽ लगेए कि....

क्यों एक मोटय : कि चाकिरताय हमकी देव। नभैवे, बाड़ि आबि जाइए कि आग्य प्रवेशमे अन्हर विहाड़ि छति जाइए ।

बोसर लोक : हँ बोनी के बोनी सँकट विपत्ति हमरा लोकनिक बँडैत पैर छानि जैए तकर परिधान के अपति भूमि जाइत बलि सबटा !

क्यों एक मोटय : के छानि जैवे पैर के ?

बोसर लोक : आकस्मिक विपत्ति । हमरा सभक बँडैत चरण अचानक छप भइ जाइए-ए । अन्वधा बाब अपन देश साथ तरहे रवतय आ, आत्मनिर्भर अछि । निद्राह कइ आत्म निर्भर-अन्नसँ औषधि छरि मे ।

क्यों एक मोटय : अजुके एखवार पड़ितवैक अछि, आत्म निर्भर जी, तकली दबाइ सथला पर कलेक स्वर्गारोहण भेलैक अछि ।

बोसर लोक : छोड़ू ! एतेक एतेक लोक भइ गेला पर एक आध टा घटना सभ विवर्धित अधिस्थित देशमे भइ जाइत छैक । भरि दुनियाँमे अहाँक देशक मान-प्रतिष्ठा कतवा-कतवा अइल कलेक साख बहुलप से कितु अछि जानकारी ? (गर्बसँ) आइ विजय वाद्वारमे अहाँक देशक तम्बुर एकाधिन पर पहुँचि गेल अछि । ई परम गौरवक विषय ! (आत्ममुग्ध होइत)

क्यों एक मोटय : मुदा विजय बाजारमे कलेक देव होइत छैक भाव सहैब ? निरीह-निरक्षर जनता के कसौ एही बुझा देल जाइक तँ बड़ कुहा अइनेक !

क्यों बोसर : इएह, एकावन तँ अकपे टा हेतैक (हास्य करैत)

चारिम लोक : बात के तथ्य के गंभीरतासँ बुझबाक चाही । तखनहि देश आगाँ बँडैत छैक । बोसरा-बोसरा देशक बासी नागरिकमे छैक ई भावना, ई नैतिकता आ, चरित्र (खेबे क्षुब्धत्व करैत) अपना कतः एकर बिलकुल्ले अभाव छैक ।

पहिल युवक : ज्ञातक मे ?

बोसर युवक : भोगनक मे ?

तेसर युवक : स्वास्थक मे ?

चारिम युवक : रहवाक बासी घरक मे ?

बोसर लोक : (चिन्तित आ खीनमयल सत) नै भाम ! चरित्र आ, नैतिकताक अभाव । आ, जाहि देशक जनतामे इएह बहि हो ओतक भी वाधान हेतैक ? की विचार हेतैक ?

पहिल युवक : (अस्तव्यस्त करवाक मुद्रामे) तँ एकटा विशेष नहि करी हमरा लोकनि ?

बोसर लोक : (उत्साहित होइत) बन्नु ! बाणू !

पहिल युवक : कियेक मे हमरा लोकनि अभीकालों कीनि आनी चरित्र आर नैतिकता ? कीनलाहा हममे तँमे इहो दुनू चलि आओत । गहाज चर्च नहि लागत, समय सेहो बाँधत । आ जखन ओ महम उधारी दइ सकैत अछि तँ एहो सब उधारी दइ सकैवे । तत्काल परिण करेगेली बाँचत आ सबसँ विशेष बात के एहि मे देखर-देखरक सेहो कीनो चक्कर समैवा नहि । आकि छैक ? (पुछैत मुद्रामे)

बोसर लोक : (कीधरों देखैत) अहाँ लोकनि बड़ उत्पंथी लागि रहल छी यी ? (पुनः शान्त होइत) ओहना, हमरा सब एखत महम वा नैतिकता बहि, हमरा दुनू तँ मूलवस्तु वस्तु-सुरेनियम मंगाइ-ग रहल छी । (कतोक चुप होइत सबके एक कजरि सीलेत) ओना अपना देशक एक टा के सबसँ भायावह दुर्भाग्य अछि... ....

पहिल युवक : नेता गिरी !

बोसर लोक : दएह, इएह उत्पंथी सबहार-विचार । वहाँ लोकनि सँ बड़ उत्पंथी बुझाइत छी यी ?

बोसर युवक : अहाँ अपना विषयमे भी विचार रखैत छी श्रीमान् ?

तेसर युवक : कोनो सुसंज्ञ नेताक पकिया मुदा स्थानीय इजेंट (ओकरा देखैत) की विचार ? (बोसर लोक खीनमयल अस्त व्यस्त)

बोसर लोक : शिव शिव एना नहि बजबाक चाही बहकि । मिथिलाक अपन महान संस्कृति आ जिष्टाचार छैक । अहाँ लोकनि



सैनिक नवसुरिदा विभक्तु एता अजगट्टेड जकां नहि करी ।  
एहि तें विधिला आ सैनिक, धनतिष्ठा हएत । एखनो  
गैर मिथिसे ! हम अपन लोक भिकहुं अहाँ लोकनिक  
(विनम्रतासे) ।

तेसर बुधक : अहाँ हा ! जरीक जाकड़ मात, खुस्तद नेताक पाकन  
परोड़क नाहरि सब छथि, सेहो तें हमरे लोकनिक  
आदमी छथि ने...

दोसर लोक : तें, से बात तें छैक । हमरा पर विश्वास करू । भरोस  
राखू ।

दोसर बुधक : भरोस ? से तऽ आइसे । आर अछि की अपनेक लग ? आर  
देखिमी ने तखन से तें एक प्याली पाहू पीवाक तृष्णा भऽ  
रहए । बीत पाहमे भेटैत छैक । मुदा कतसँ पीथू ? जेबोने  
पाइ रहए तखन ने । तयापि भरोसने, बिश्वास रखवासे  
कोसो कमी नहि अछि महाराज । भरोस नहि ही तें मनुष्य  
..... पाह पर अपने सन, अपने सन एजेन्ड भेटि जाथि  
'बोल भरोस छाप' एजेन्ड तखन तें कर....

दोसर लोक : (विचकिचा कऽ) अहाँ दीके उपपत्ती छी । अहाँक बजलाइए  
सँ बुझा रहए-ए जेना कोसो आतंकवादी संगठनक जगत  
छी । (तावत दर्शक सभमे जेना कतपुसकी होइ लगैत छैक  
आ, हुल्लुक फल्लुक पड़एवाक उपक्रम बृद्ध । लोक एक  
दोसराके पुछऽ लगैत छैक कत छै भाष उपपत्ती । कहाँ छैक  
आतंकवादी संगठन ? के पकड़लक ओकरा सबके । तखने  
पहिल लोक दोसर लोक के तत्संबंधित फफऽ कहऽ लगैत  
छैक)

पहिल लोक : हुमहुं गौर कऽ रहल रही जे आखिर अहाँ चरतु की छी ?  
मुदा आव जा कऽ पता चलल जे अहाँ कोनो छूतदभल  
नेताक अवस्थे किछु छिदैक । गार-तार भिछु । (ओकरा  
पीठ पर पोछवैत जकां सिनेहसँ पुछैत छैक) ककर-तिर्यंग  
अहाँ ?

दोसर लोक : विचित्र बात थी । हम-मिने होअऽ मैनिमिनि किनको किछु ?  
हम तें तयाता देखऽ आगए रही । हम... हम किएक होअऽ  
अगवै ककरो किछु ?

पहिल लोक : नः । हमरा तें वनाक बुझाइत अछि जे अहाँ कीसो राज-  
नैतिक बलागी कऽ आपन छी एतऽ । सोचने हएब जे  
किछु जनता प्रकारक लोक जमा छै एतऽ । कतीक विमान  
सेहो हेरीक । चलो, कभी विमा एतहु छोड़ैत चली । ओही  
अनसलक बीच जे अंकुराड, जन्म जकर कसिल सेहो बहलहो  
उठै, छाती ओझिमे अनाजक दाना नहि खरीक ..... आ,  
तयो लोक ओहि कमिलक आगा बाटी मौतमक मौतम  
तकिते रहि जाय । एहि बाँज कमिलक रखवासीमे सभ दिन  
मारी रहए । एहि बाँज कमिलक आहिमे-कहिदो कीनो  
जीव की दाने ने खरीक ! तँह ने ? महाराज ?

दोसर लोक : अहाँ की, राजनैतिक कर्तृत्वसँ डाढ़ करवाक इस्वी  
छी नी ?

पहिल लोक : बिलक्षण बात ! अनभव ! राजनैतिक विवाद ! तें ?  
बड़ दिव्य ।

दोसर लोक : हमरा तें बुझाइत अछि । बिप्रेक तें जनता जाहि बायके  
बुझि रहए तँक तालिसँ ओकरा अहाँ भटका रहल छिरी ।  
गहाँ बाग भें तें अहाँक कतेक पता बखीए । (चितवैत स्वरमे)  
ई बड़ अधलाह बात ! बड़ खराब । ई एक प्रकारक देवा-  
दोह विक । समाजक सज्ज विश्वासघात ।

सबो एक मोटय : देवादोह ? विश्वासघात ? तखन तें ....

दोसर लोक : अहाँके अछि बूझल कि नहि जे एहि अपराधक वास्तो  
अहंगिर कानूनी कारवाई कएल जा सकैए । एहन  
गम्भीर सामाजिक आचरण करवाक चकते कानून द्वारा  
अहाँके हथकड़ी धरा कऽ बहलमे बन्ध बाड देल जा सकैए ।

पहिल लोक : सँह तऽ कहैत छैक । तें भी बलासी करी अहाँ आ जेहल  
मे दुसल जाय ई लोक ? कियो संसूर । धिक्कार  
अछि !

दोसर लोक : ( एकएक बिलख होइत ) अपने कोन पाहीं अफिलियेटेड छी ? बाई दि के...कॉर्सेस ईका, जनमेव मतलब जनता समाजवादी-साम्यवादी आ कि स्वतन्त्र...ककराखें ?

पहिल लोक : हमर अपन पाहीं अछि-कराक । एहि बैचरपर हमरा लोकनि कोनो खुशबू नहि लव्वाहीं । (जेना धसकी बेंत) मुचा ई धुनि बुली ! बरौमानमे हमर कांडर अछि एकधन देशक !

दोसर लोक : की ५५५ ! (धक्कावल सत)

पहिल लोक : जी ५५५ । चबड़ा पैसी । जतल दीगी ?

(पाछी तँ हल्ला गुल्ला आ एकटा प्रमुख स्वरबुद्धि रहल छँक जे भाय एतऽ की कऽ रहल छँक ? कोनो राजनीतिक पार्टीक कार्यक्रम कऽ रहल छँक की ?)

दोसर लोक : (अचानक भंगिमा बदलत) हँ, एतऽ एखन राजनैतिक पार्टीक एक टा देश व्यापी महत्वक कार्यक्रम कऽ रहल छँक । (तकर बाद ओ ओहि माइकीफोन जव जाय चाहैत अछि जे माइक तत्सक सेहो आ सकैत छँक आ, काल्पनिको ! तावतहि साँवरिया धौली, कुरता आ एहि बेर प्रशासक मोटका पोला साथ पर टोपी पहिरने लोकक सोझाँ आवि जाइत छँक आ' दोसर लोक विरोध करैत छँक)

साँवरिया : नै-नै । मुठ ब्राह्म । पार्टी-कार्यक्रम नहि छँक । एतऽ हमरा सब प्रार्थना सब करवा लेल जूमल छी । अपन महान रोगी नेताक स्वच्छन्द लाभक लेल सामूहिक रूप सँ सामरिक प्रार्थनाक लेल उपस्थित छी । अपन प्राप्तिमे वृद्ध नेताके दीर्घायु विजयशोक लेल ! (ओ चेहरा पर भवितक झिल्लता अगैए । दोसर लोक आ साँवरिया एहि घोषणा सँ पहिल लोक अस्त-ध्वस्त आ चितिक भ' जाइत अछि आ ओकरा समक बात के कटवाक कोशिश कर' लगैए)

पहिल लोक : सई पाय लोकनि । भे नई । ई लोकनि सूठ बाजि रहल अछि । अहाँ लोकनि भ्रममे धुनि पड़ू । एतऽ तँ हमरा

लोफनि किछु नमगुनिया, गलटक सेवयवा लेल जूमल छी । अहरेक एहि सबजनिया स्थाय के हमरा लोकनि एकटा नाटक सेवयवा लेल चुनलहैं । देवोच छिद्री चारु कात सँ अद्वैत जाइत जन-जीवनक बीच एहि सूखल लोक-प्रवाह मे हमरा लोकनि एकटा सामाजिक नाटक खेलाय चाहैत छी, जकरा अवैत-जाइत सर्वोपाधारण लोक सेही देखि सकव । ई नहि जे कल्प हल्लेक समुद्र संन जकाँ छाडी वायु-प्रेमा-हाकिम-मंत्री । लोक देखि सकव ।

दोसर लोक : (अधीर होइत) नै नै ! अहाँक कहलासँ हुएत ? एहि पब्लिक प्लेस के हम पाहीं कार्यक्रमक चारो चुनौती आ' सफल हेतैक एतऽ ।

साँवरिया : से नहि हुएत । एतऽ एखन सामूहिक सामरिक प्रार्थना हेतैक । बहिने प्राप्ति-रक्षा ! एते' मोट महान नेताक प्राप्ति-रक्षा ।

दोसर लोक : ई रोगी-वाक्यही ! कऽ निषेध

पहिल लोक : ईह, पार्टी-भाषण आ' प्रार्थना सभा ! ककर दिन छँक जे नाटक छोड़ि कऽ आन किछु करत एते'...

साँवरिया : (खूब जोरसँ) हँ जी, ई-ह हुन ! हम सँ करव प्रार्थना-सभा देखके एकरे जबरति छँक एखन । एतेक लोक जमा होत अछि एतऽ । एतऽ हमरा सब अवश्य नरनापतन महान नेताक तबले स्वास्थ्य लाभक प्रार्थना करव । आइ राति पीते नी बजेक बुतेदिलमे ई सवाचार थापव अत्यंत आवश्यक छँक, जे हमई अपन एहन महान नेताक थोडा बच्चाक लेल सामूहिक प्रार्थनाक तथा आयोजित कयलौ । भरि अहुर ।

पहिल लोक : (क्रोध आ' विवशतासँ) किंचित बाल । ई खान चुनौतीहें हमरा लोकनि नाटक वास्ते । आ' ई अहाँ लोकनि की बक-बक कऽ रहल छी गी ? कहूँ तँ, हमर सब टा पात्र लोक एतऽ आवि चुकल छथि ।

दोसर लोक : तँ बापु प्रोआ कऽ बैचविषयु एखन !

पहिल लोक : बाहू बाहू ! हमरा लोकनि पैदल, साइकिल पर जेना-जेना धुनि घूमि कऽ सब ठाम काबाब पर, कूट पर लिखि-लिखि



कहें टंगले छिपेक जे भाइ एहि नीजड़ी पर नाटक हूएत  
आ' ई कोन तमासा कइ रहल छी अहाँ लोकनि (बुनूके  
देशीत जेना बुझयबाक चेष्टा करैत) अहाँ लोकनि खास  
बाह्र हजार निर्धारित कार्यक्रममे विघ्न उपस्थित कइ रहल  
छी ? अपन टांग खड़ा रहल छी—नाक दुबल रहल छी ।  
चलू, हटू एत' सँ । दियस जगह । (ओकरा साइकोफीन जमल  
हृदयवाक प्रवास करै छैक)

साँवरिया : (जेना बाँह्र भँजैत) नाक हल दुबा रहल छी कि घोर  
लोकनि ? (ओ शरङ्का करवा खेल प्रस्तुत छैक)

पहिल लोक : मतलब ? ई एतेक राम दर्शक मय शखनमें ठाढ़ छथि  
नाटक देखवाक लेल । 'आ' अहाँ लोकनि मिलिकइ ई कोन  
उपद्रव ठाढ़ कइ रहल छी ? दर्शक जुमवाक आ ई मंचक  
व्यवस्था द्वारा लोकनि कबनहि नाटक करवा लेल आ  
कहूँ छैक जे 'कएल घएल पर श्री जगरनाथ' कइ अथवाहि  
अहाँ लोकनि । हमर गोरे हथिया रहल छी । अनवत्त  
चलाही । चलू, हटू, हमरा शुरू करइ दियस नाटक । बड़  
समय भइ गेलैक हटू एत' सँ ।

दोसर लोक : मज्जात धिक ! ई पब्लिक प्रेस डिप्टी । कोनो व्यक्तिगत  
नाभिक वास्ते एकर हृदययोग होवइ देल जायत ? सेहो  
कतेक रक्त वायव्यक जगतक आर्थिक कोशा ? एकर  
बुद्धयोग कइ अवतैक ?

पहिल लोक : नाटक कि कोनो राजनीति छैक जे बुद्धयोग....

दोसर लोक : चुप रह । एहि नाटक-नाटक में की भेगिहार ? सरइ  
बाइ तँ राखि गाडी ? देशक जनताके एखन राजनैतिक  
चेतनाक जरूरत छैक । नाटक आ प्रार्थनाक नहि ! सीस  
देशमे अकाल पड़ल अछि । आ' एतइ मनोरंजन चलल !  
(लोकके सम्बोधित करैत) तँ इएहू खोचि क' जनसाधारण  
लोकमे सम्मदारी आ' चेतना बँटवाक उद्देश्ये हँ हम एत'  
साप्ताहिक भाषणक कार्यक्रम चालू क' रहल छी । (मला  
साफ करैत बजवाक उपक्रम)

हँ तँ, भाइ अंधु आ' अंधीनि लोकनि....

एते एक मोटय : बहिन कहाँ छथि एतइ भगहू टा । नमो भाइए तब'...  
(ताबत खोजहिमे साँवरिया बाजइ लगैत छैक)

साँवरिया : भाइ-बहिन लोकनि ! ई घोर विस्मयने धिक जे एखन एहि  
क्षणमे हमरा सभक एक भाग जन-नेता, एहन महान नेता  
अस्तित्व मे पड़ल-पड़ल अन्तिम साँस गति रहल छथि,  
जे घड़ी मे नाडी धीमि लेनि... तोते देल बाओर हरिसंसारक  
लोकक आँखि आ' मन एही नेता सेल टांगल छैक आ, ई  
महापुत्र राजनैतिक जगत्मे कइ रहल छथि (पूर्णसे)  
धिक्षकार धिक । गहार लोक सब नहि तम । धिक्षकार ।

एते एक मोटय : त. बारतयमे कहूँ तँ भला ! कृत्रिम सहानुभूतिसे)

साँवरिया : एखन हमरा लोकनि महान नेताक जीवन-रक्षाक प्रश्न  
उपस्थित अछि, अक्षरी अछि एहि वास्ते जे बेसीत बेसी  
तंख्या हम सामूहिक प्रार्थना करब, अधिक सँ अधिक  
तंख्यामे अष्टजान हुनवाधि, पुष्पा-पाठक आवश्यक्ता छैक,  
कि एहि भाषणवाजीक ? किन कहैत छैक जे भोज मे भात  
हड़हड़ गीत

एते एक मोटय : त. सत्ये ! अहा ! महान नेताजी ! अहाँ हिनका लगेर  
खूब बड़ा दियसु हे छथि परमेश्वरी !

साँवरिया : (सहयोग वसैत जकाँ) एहने लोक सब । इएहू बेगीसिम  
मलार गोमिहार मय संपूर्ण देशक अधिन्य कोपड़ कइ देलक  
अछि । (क्षणक चुप रहैत) राजनैतिक चेतना....

दोसर लोक : नैन, अहाँक प्रार्थना ! (ज्यमखर)

साँवरिया : तखन की ? आ, सेहो लोक रहल अहाँक सँ एकटा बात ।  
सोनाकि हम लोक कि तोरा पाटीक छइ । चीन्हीत छहक ?  
(सभके बेसैत मुग्ध होइत जकाँ) देख कहक सभक मुष्कलति  
कर करल प्रार्थना-पूर्वक पवित्र आभा । एही देखि कइ तोरा  
नहि बुझा रहल छ जे ई लोकनि प्रार्थना करवाक नैथिक

मूढमे छथि ! ई लोकनि प्रार्थना सभा करब आयेला छथि ।  
ई प्रार्थना सभाक लोक छथि !

पहिल लोक : अगब ताल अछि । ई दर्शन लोकनि तँ नाटक देखबा लेल  
आयल छथि । हिनका राखे हमरा लोकनि नाटक देखबा  
ले, स्थान-स्थान पर सूचना गोसने छियनि, तँ आयल  
छथि । ई लोकनि दर्शन छथि । हमरा सभक सामाजिक  
नाटक देखल आयल छथि । आब हटू-हटू अहाँ लोकनि ।  
(ओ माइकोफोन लगतँ हटब चाहैत छैक) छोड़ू, छोड़  
हमर माइक ।

सांवरिया : आब एकर सदुपयोग प्रार्थना सभामे हेतैक तखन किछु ...

पहिल लोक : दिक्क, छोड़ू हमर माइक । बेसी खर्ची काशि-कादि कऽ  
एकर इतिजाम करी हमरा सब आ, एकरा हथिया कऽ  
'सदुपयोग' करताह ई ? से की, तँ प्रार्थना.....अलबत्त  
बाबू ! माइक हमरा लोकनिक.....

सांवरिया : भलऽ चलऽ ! हिनकर माइक ! ई तँ तेहक युवा केन्द्रक माइ-  
कोफोन छैक । सूट चरकारी छैक । एकरा वास्ते किराया  
कियेक देबऽ पड़ल हेत ? सँतो-मट्टी बँत छहक पश्लिक  
के ?

पहिल लोक : नै-नै । चुन संपत ! माँग ठीके भेल रहियैक तेहक युवा  
केन्द्रसँ । मुदा ओकरलाखड स्पीकर चल गेल छैक  
ओकर हाकिमक बेटीक बियाहमे बरियाती पढीक बास्ते ।  
नहि, यदि खाली रहितैक तँ बेचारे अवश्ये टा बऽ बितथि,  
बड़ दिव स्वमान छनि बेचारेक । (एके क्षण रुकि कऽ जेना  
सचेत होइत) मुदा एखन.....हमरा सब के एकर आइ  
देबऽ पड़त । ई माइक बिक कंपनी वाला बड़ कुपा कऽ कऽ  
गाथ दू घंटाक वास्ते उधारी देलक-ए ।

बनो एक मोटय : (उजियारसँ स्वर) आज्ञा दिखीक । हिमाय छुनि दिप ।  
आरम्भ कस माइक ।

पहिल लोक : हँ हँ-हटू-हटू । बड़ बेरी गैलैक । सभटा दर्शन उजियार

कऽ बिना देखनहि पड़ल। लानत । सभटा उजियारसँ सबै  
दिक-दिक भऽ रहल छथि ।

बनो एक मोटय : की दिक-दिक एहिमे ?

पहिल लोक : बाहू रे बाहू, जनताक मनोरंजन वास्ते हमरा लोकनि ऐके  
गोहणति कयलैहँ । जनता आयल अछि नाटक देखल आ,  
ई लोकनि एक मोटय राजनैतिक भाषण आ, दोसर मोटय  
प्रार्थना सुनब चाहैत छथि जनता के । हटू भऽ भेल ।  
(किछु ओरसँ) हटै जाउ । हटू । कुपया हटि जाउ.....  
(एक मुदा प्रार्थनाक स्वर ओ माइक पर बजबाक उपक्रम  
करैत अछि मुदा स्वर काँपि पड़ल छैक धबराहटिमे) हँ,  
तँ भाव लोकनि । हमरा सभ नाटक आरंभ कऽ रहल छी ।  
दर्शन गण कुपया क्षमा करू । अपने तँ सब किछु देखिये  
रहल छी तखनसँ । भाग करी । देखलियै, पहि की-की  
विषय उपस्थित करैत भेलाह-ए ई लोकनि ? और आब  
हमरा सामाजिक नाटक शुरू होइत अछि । एकर मान  
अछि .....

(ताबतहि माइक लुप्तबाक दृश्य उपस्थित भऽ जाइत अछि ।  
क्रमशः पहिल लोक, दोसर लोक तथा सांवरिया, एहि तीनू  
गोटक बीच भाइक छीनबाक संसदि आरंभ भऽ जाइत छैक ।  
तँहि तीनू मोटय अपन-अपन बातो बजैत अछि )

‘‘पहिने हम राजनीति करब

‘‘पहिने हम प्रार्थना-सभा करब ।

‘‘पहिने हम नाटक करब.....

अकसरनुमा अभिषि : देख, अहाँ लोकनि सगड़ा छुनि करैत जाउ । ई पहिलक  
प्लेग थिक, सबजन्तियाँ स्थान । एतऽ एना क्षमता नहि करी ।  
अहाँ लोकनिक एहम कष्टावसँ गहर सम्भला पर बड़  
खराब प्रभाव पड़ैत छैक । अहाँ जलैत छियैक ? अहाँके  
अछि भूलल जे एक लहरमे कतेक जाति, धर्म, भाषा आ  
सम्प्रदायक लोक रहैत अछि आ कतेक पेशाक लोक रहैत



छेक ? (पुरुषकृषिमे 'हथ पंछी एक ढाल के' गीत बजैत रहैत रहल तँ उत्तम ।) 'हिनका' लोकनि पर खराब प्रभाव पड़ैत छनि ।

बम्बो एक गोठय : (बगलमे ठाढ़ चुपक्यों हिनका बिस दुधारा करैत पुछैत छेक) "अगरे के बिकहु ? की बिकहु ? आ कभी लेल प्रतिज्ञ बिकहु ?

अकसरनुमा व्यक्ति : अहाँ लोकनि के भरितक ज्ञान गहि अछि (सबके तौनैत जकां गजरिस देखैत) जे इएह एहने छोड़-छिन लगनिहार आपसी झगड़ा सेहो साम्प्रदायिक बना बनि जाइत छेक ।

(ओम्हर तीनू व्यक्तिक मुँह झगड़ा चित्रमे रहल छेक । ओखि-हाथ-गुँह आदि मुद्रासँ देखल जाइत छेक)

आइत हा । शान्त अहाँ लोकनि शान्त रहै जाय । पब्लिक स्थलमे झगड़ा-झूझति नहि करैत जाय । अपन स्वतंत्रताक एहन दुरुपयोग नहि करैत जाय जाय । अपना-अपना अधिकारक दुरुपयोग नहि....

बम्बो एक गोठय : (शान्त करैत) शान्त भऽ कऽ मुनैत जाय जाय यी । ई की अंद-अंद कएने छी ? एतेक तँभीर बात ई साहैब कहि रहल छथि । आ, अहाँ लोकनि....

अकसरनुमा व्यक्ति : (पुष्क के प्रस्तावसँ देखैत) हँ शान्त रह । एहि प्रकारक एहन आचार-विचारसँ हमरा लोकनि के लोक सब अस्थायी बनि सकै-ए (हाथ जोड़ि कऽ) हम कल जोड़ैत छी, हमर निवेदन जे अहाँ लोकनि शान्त आ' व्यवस्था बना कऽ राखू । आ' शान्तिपूर्वक अपन-अपन प्रोत्साहन सफल करू । हम अहाँके सहयोग करवा लेल प्रस्तुत छी । हम अपन सेवा अर्पित करवा लेल आबल छी, दूखू नै अस्थी कोरा बनारस सँ ?

बम्बो एक गोठय : ई राजन के बिकाह ? सम्भवताक संज्ञात प्रमाणुति ?

बम्बो दोसर गोठय : बुनेरक रिटायर्ड डी० एच० थिंकाह । तीन मास पूर्व रिटायर भेलाह अछि । आइ-काहि सभाज-सेवासे अपन जीवन अर्पित कएने किरि रहल छथि ।

अकसरनुमा व्यक्ति : अपने लोकनि परिस्थिति बुझियौक । हमर निवेदन अछि (तीनू गोठय के कहैत) परिस्थिति बुझियौक ।

दोसर लोक : बुझैत छियैक । मुदा पहिने हम राजनीति करब ।

सांवरिया : नै । पहिने हम प्रार्थना-सभा करब ।

पहिल लोक : नै । पहिने नाटक दएत ।

दोसर लोक : नै । पहिने हम....

सांवरिया : पहिने हम ।

पहिल लोक : पहिने हम ।

अकसर : देखै जाय । अपनाओ एता झगड़ा-संघट करैत जायब, मंगनीमे सब या गबबड़ भऽ जायत । पुक्ति हस्तक्षेप करत भा सब या नाश भऽ जायत । सबक प्रोत्साहन अगरे फेल भऽ जायत । फल हएत जे तीनूने सँ बम्बो गोठय किछु नहि कऽ सकैत जायब । (किछु सोचैत) दोसर बात, जे सम्भव मोल दूखी । एतेक काससँ एतेक राख लोक ठाढ़ छथि । इहो लोकनि तमसा जयताह ।

पहिल लोक : (किछु सोचैत) किबेक नै हमरा सब एकर समाधान प्रकाशकी उपामसँ कऽ ली, (अकसर के पुछैत छेक)

अकसर : उचिते किने ! अपन देशक आदर्श सँ प्रकाशके अछि । कहू । की होयबाक चाहौ ।

पहिल लोक : किबेक नहि हमरा लोकनि उपस्थित दर्शकसँ श्रोत करा ली ?

अकसर : से की ? ताहिँ ?

पहिल लोक : पब्लिक जे वाह्य, साहू, कार्यधम पहिने हो । भोटे भऽ जाय । एहिसे जनताक चितिक पठावेहो फल जायब आ' स्वयं नै ई शुद्ध जनतासिक व्यवस्था सेहो केत ।

(ओकर एहि प्रस्तावसँ हुनूक चेहरा पड़ल जकाँ बुझलत छैक । तेकरा अफसर एहि लेल छैक आ दुबित पेश करैत छैक)

अफसर : नहि, हमरा विचारै तँ ई उचित नहि हएत । आधुनिकी नहि । मजदूरसँ ओसरीहरिये टा बहुत । आपसी मतभेदे गहरीर हएत । हमरा विचारसँ अजब देसमे एक ठा बड़ लोक परम्पराक पुनारोम भेल अछि । आ, निश्चिते हमरा लोकनि के ओही परम्परा के मजबूत करबाक चाही ।

दसो एक मोटय : कौन परम्पराक महोत्सव ?

अफसर : निजिरीय चुनावक परम्पराक ।

दसो एक मोटय : (बोवहिमे) अलबत्त ! तँ यी, एक-एक ठा बीट लेल गाहीक गाही चम्पेदवार ठाड़ होइत छथि नीसे चुनाव क्षेत्रमे, एक-दोसरा उपनीदवारक लडिधर आ' हुँतेरीक संघर्षसँ चुनबू आ' बन-बिस्तीनसँ अतंक पसरल रहैत अछि कतेक केँ अमेरे अगुनी खेलेमे प्राप्त कति जाइत छैक आ' अपने करमा रहल छी निजिरीय चुनाव ...

अफसर : (किचिद उठिन हुँइत) हम ई कयन कहल के से स्थिति नइकाने बहुत छैक । मुदा छैक । एखनहि अपन एक जालमे नेताक चुनाव बड़ आदर्श संघर्ष खूब शालीन आ' स्नेहपूर्ण वातावरणमे निजिरीय सम्पन्न भेलए । आ' हमर विश्वास अछि अरिक्त भविष्यवाणी जे, एहि घटनाक प्रभाव पुरा देसक भावी चुनाव पर बड़ गंभीर रूपेँ पड़त ।

तसो एक मोटय : मतलब के चोट नहि कराओल जाय ?

अफसर : हँ, एखन हमरा शैकनिक कर्तव्य अछि जे उपस्थित दर्शक केँ अविवरणसँ ब्यवस्था । ई लोकनि अत्य उन्नि रहल छथि । कोयित भइ रहल छथि ।

पहिल लोक } तँ हम की करी ? प्रोग्राम तँ हमर सम रहल । (तीनू एकहि  
दोसर लोक } संग कहैत छैक)  
तसविरिया }

अफसर : (तीनू के पीतहवैत जकाँ) कोनो बात नहि । अहाँ तीनू मोटेक प्रोग्राममे फेनी अन्तर नहि अछि । एक्के अछि । एक्के बालक भीन पहुँ ।

तीनू : तँ आखिर हम करी की ? (एकहि संग)

अफसर : कहैत छी, अहाँ लोकनि जनैत छियैक (रहस्य मुन्यबाक मुद्रा मे) जगत राजनीतिसँ बोर कइ चुकल अछि । जखन कि ओ धर्मकेँ एखनो खूब मार्भत अछि । जगत एखनो बोर धर्म प्राप्त अछि आ' कला घेनी तेरो । ओ बुझ के आशंक अछि । तँ हम तँ विचार एइ देस जे राजनीति अहाँ पहिने कइ लिपइ (बोसर लोक के देखैत)

तसविरिया : (चितित आ' अनुतापल भावें) मुदा पहिने राजनीति होमइ लगलैक आ' रही बीच कतहुँ हमर मद्दाल नेताक प्राप्त छुटि जाति, तखन ? तखन हमर ई प्रार्थना सभाक एकीक रास-लोकक भावनाक की हएत ? की हएत प्रार्थना सभा ?

दसो एक मोटय : प्रार्थना सभा शोक-सभा भइ जायत । शिकं बातें अवगत किने ? लोक तँ नहि बसकता । कोनो सभा तँ आखिर करवे करव....

तसविरिया : अहाँ बातें ते दुसलियै । आजी बनिषा जेल हम प्रार्थना करइ चाहैत छियनि सएह करि जयताहुँ तँ हमर एहि प्रार्थना सभाक की दास रहि जायत ?

तसो एक मोटय : रदिये किली । जे भाव पलाँकी साभक चलि रहल छैक । आर कातिह । (ताहि पर तसविरिया ओकर तरटी पकरबा पर विरत छैक आ गारि एइ लयसँ छैक सार... देखैत हम ।)

अफसर : (बुझवैत जकाँ) चुनू यी । अनुताप जनि । पाम रजत की — दान रहल । सभक भावें होयबाक चाही । दसक । ऐना अर्थमे जेलासँ भोड़ै हएत । शक्ति सोरो विगड़िसे जायत धावै । (क्षणिक शक्ति क') तेहो प्रार्थना सभा भगवान आ भक्तिक धनुष बिक । जगत बखनहुँ शक्ति मुनि कइ कान सवइ कइ कइ प्रार्थना करइ आनि आ' सकोत अछि ।



और गड़ि हुएन एक रसी । तबने चौकल नाटक । तें  
नाटक सबसँ अन्तमे पाछे ।

पहिल लोक : किण्क, नाटक सबसँ अन्तमे किण्क थी ?

अकसर : एहि द्वारे से, जेकर लोक मूख उपस्थित छथि ते बिना  
नाटक देखेगे-थे जाइत रहि अस्ताह । तावत हरि ठाढ़  
रहताह ।

यो एक मोडन ; किण्क ? अन्तमे बहुत धुड़ि से एतेक-एतेक काल ठाढ़  
रहने ?

अकसर : गड़ि । नाटक सबके लोक अन्तमे छैक तें ठाढ़ रहने । दोसर  
बात से एहन जे एतुके मानाविक समस्या अछि ताहि  
के उपस्था रस्ता आवश्यक हुएत । बुधियारी उपस्था  
अछि । यकरे हिम तें हमके विचारमे लगइ आ' केर ईमा-  
फसाव किण्क हो ? आ' सबन शान्ति-व्यवस्थाक लेल  
मुनिसे के ने व्यवस्था पड़ै ?

पहिल लोक : (किञ्चित्त लज्जित आ उदास होइत) लेकिन भाय साहेब,  
नाटक सबसँ पाछे ? जवना प्रथम कएल-धरत हमर आ'  
हमरे नाटक सबसँ पाछे । वाह ! कहूँ छैक जे एकरे  
मायक थाइ तकरे पात भाव गड़ि ? कमाल करैत छी  
भाइ साहेब !

अकसर : नाटक किण्क गड़ि ? अहाँ के तऽ लाभे लाभ अछि । तावत,  
यावत ई दुनू कार्यकल समाप्त होइत बहुत भीड़ जुनि  
जायत नाटक बेरसे । बैसम्हार ने भऽ जायत भीड़ ।

पहिल लोक : मुदा भाइ साहेब, बीड़ तऽ राजनीतिक लेल जरूरी होइत  
छैक । नाटकक माते थें हमरा दर्शक जाही । आ' ई एतेक  
राम लोक अहिके कम खुसाइत अछि । (उपस्थित समुदायके  
देखैत)

अकसर : सेहूँ बेला । मुदा आरो दर्शक जमा भऽ जायि ताहिमे  
अहाँके आपत्ति कोन ? नाटक आरो जायत ।

(तावत दोसर लोक आहाँ अड़िकऽ कहैत छैक)

दोसर लोक : आ' ओहूँ, ई ओहूँ गन हमर अछि ।

सौधरिया : (तनैत कहे) गड़ि, ई गन मोडन हमर अछि ।

पहिल लोक : गड़ि । ई दर्शक हमर अछि ।

अकसर : (किञ्चित्त सीमाइन) ओहूँ । एहिमे धोन कहीवसी छैक भाइ  
दर्शक, दर्शक अछि । एहि सबनिकी पश्चात् जेतने ठाढ़  
अछि । एहिमे भी बहुत विवाद छैक जे ई दर्शक ककर ?  
(शान्त छत जनाक छवि देखि कऽ) ई दर्शक सबक अछि  
कियेक तें अहाँ तीनू मोटेक अपन अपन उद्देश्य अछि ।  
आ' से काज तीनू मोटेक के एही दर्शक वा जनतासँ जलज-  
वाक अछि । आ' से नहि जायत । आ' बड़ चुनकर यहाँ  
जनि जायत । तबने एकर की सिवाय जे ई दर्शक ककर  
छैक ? ई दर्शक यहाँ तीनू मोटेक अछि ।

सौधरिया : मुदा ते कोना दर्शक छैक थी ? ई कोना भऽ सकैत छैक ?  
ई लोकसि एकहि तरे हमरा तीनू मोटेक कोना बनि सकैत  
अछि ?

अकसर : कियेक गड़ि ? एहिमे विकल्पिते की छैक ? जेना बेसी अहाँ  
लोकनि हिनका सबके संबोधित करवनि । आ' यावतकाल  
धरि अहाँ लोकनिक अपन अपन कार्यकल चलावैत रहत  
जायत ई लोकनि अहाँ लोकनिक वक्ता रहताह । एकक  
जबन हुएत, तें दोसर मोटेक अछि जायताह । एहिमे केर  
दोसर मोटेक..... (मुघ्न साथे) अपने देशक पब्लिकक ई  
महानता जे काज धंधा छोड़ि कऽ एतेक-एतेक काल  
प्रोधान कर्मनिराक सहयोग करवा लेल ठाढ़ रहथि ।  
पब्लिकक ई महान सहयोग अहाँ लोकनिक सहजहि प्राप्त  
अछि । लाभ उठयै जाइ जाइ ।

सौधरिया : (कवार वर अंगुरी घुमवैत) मुदा हमरा मुँठमे ई रसि नहि  
रहल अछि अहाँक ई चरचा-बाँट !

अकसर : (किञ्चित्त अपमानित अनुभव करैत) जेना मानि कियऽ जे  
पहिने राजनीति होइत तें ई कम सोना एहि साहेबक भऽ

जयशिव (दोसर लोक के देखवत)। तखन अहाँक प्रोग्रामो अहाँक प्रार्थना भयनिहार लोक आ अन्तमे सबटा पशिक नाटकक दर्शक बनि जयतैक—ओइ ताहिबक लोक भऽ जयतैक। (ओ पहिल लोक दिश ओपुर देखवत कहैव छैक)

पहिल लोक : (जेना किछु चोचत बिहोसैव) चल् । ई नीके व्यवस्था भेल । लोके बात । अन्तमे नाटक रहलासँ सबसँ शीटल-शीटल दर्शक आखिरमे खाली नाटकेक रहि जयतहू । जेजाय रहि । ते कार्वकम उभियसैवला रह्य सन्हू होमबोक बाही पहिने....

दोसर लोक : तखन तँ हमही अन्तमे राजनीति करब ।

ताँवरिया : ईहू, आव तँ हमही अन्तमे प्रार्थना-सभा करब ।

पहिल लोक : रहि । पहिले व्यवस्था ठीक अछि । ओहूनी तँ आद-काहि नीचन आ समाजमे जनैक वासी लोक सबसँ पहिले राजनीतिमे अतरकष करैये । रिटायर्ड छीऽ एम० सँ लऽ कऽ मृत सेवाक आरोपमे तर्कसँ भेल कोनो धाना इन्चार्ज वा आम कोनो पुलिस अधिकारी सभ । पहिले मोहल्ला वार्डक राजनीति, तखन नगर-राजनीति ।

पहिल पुनः : ओ भाइ माहेव कुल्पा भेल कहिकरैक । हमरो अनुभव सन्हू अछि । ठीक ।

पहिल लोक : देखीक किसेक कहब बंधु । एहूना लोक तबमे, बिचकर राजनीति नहि जमैत छनि ते कोनो ते कोनो फर्मक मालिक वा ईश्वर वा जनेनेता के माथा पहिरा कऽ प्रार्थना आ आरती पर जतरि जाइत छथि । हुनका लेल साप्ताहिक एखवार छपऽ जमैत छथि । जनता तँ आइयो धर्मप्राण अछि । कोनहुँ प्रार्थना हो, जूमि-जूमि कऽ आखि मुनने बच-बच पर मुहौ लडैत रहैछ । आ एहि तरहेँ नाटकक जन्म होइत छैक आ से जकता देखै-ए । बेर बेर देखै-ए एहि प्रकारेँ राजनीति आ धर्मसँ किता लैत मानवान बनैए ।

दोसर लोक : (लौसाइन) अहाँ तँ भयषण बाबू कऽ दैतियैक छी । आखिर अहाँ की चाहैत छी ?

पहिल लोक : इएहू जे पहिले अपने राजनीति शुरू करू । तखन ओ प्रार्थना-सभा करब आ अन्तमे हम नाटक करब ।

(अकसर विशेष भंगिमासँ दोसर लोक के देखैत जेमायोस्ता-हिन करैत छैक तखन तीनू बाबेदार क्रमशः बजैत छैक )

दोसर लोक : जेन तँ पहिले हम राजनीति शुरू करैत छी ?

ताँवरिया : ठीके छैक । तखन हम प्रार्थना-सभा करब ।

पहिल लोक : ठीक छैक । तखन अन्तमे नाटक हेतैक ।

अकसर : (आगाँ बढ़ैत) ठीक । ई व्यवस्था उचित । आ' भेलत कि एतऽ परिस्थिति अछि, एहन, ई व्यवस्था पूव तौलरायल आ सभक पक्षमे भेल-ए । (ओ सन्तुष्टिक रसत घोचैत छथि ।)

दोसर लोक : तखन, आरम्भ करू हम ? (अकसर आ दर्शक के फुटैत) उपस्थित सबकक हुन्य.....

(कि तावतहि एकटा दुःखी भाकल-हारल भिखारिसँ वृद्ध एक दिससँ दर्शक सभके घूँटवैत जगाँ अबैत छैक । सभक अक्षन ओकरा दिस चलि जाइत छैक । ६० वर्षसँ कम केर नहि हेतैक । ओकर एहि आकस्मिक उपस्थितिसँ 'दोसर लोक' खोला जाइत छैक आ फोडित भऽ जाइत छैक)

दोसर लोक : हौ बुढ़ा ! की छऽ एतऽ ? चरऽ ओम्हर, कानमे जाकऽ जाइ भऽ जाइ । भाषक चुनऽ ।

वृद्ध : मै झुज, हम भामन मुनऽ नहि आवल छी । हम त बड़का चित्तिये बड़ल छी सरकार । हुअर बेटा आइ तीन दिक्क, जानि मे कतऽ निपत्ता भऽ गेल-ए । तकरे हम नऽ छै छिये जे कहना कऽ ओकर एता लागि जवैत....

दोसर लोक : ते त ओकरा पता लगवाक ई कोन जगह भेटलह-ए तोरा ? अरे ओ गेल हेतऽ पड़ऽ कऽ बम्बई फिर्माने, राजेश खन्ना बनऽ गेल । भुतऽ पता चलतऽ ओकर ? आ, आ' एखवार



सबसे अंगरेजीमें हिन्दीमें सबसे, ओकर कोदो छपा बहक  
....मुदा एतऽ सँ एखन खनि जा । (खोसावन) एतऽ एखन  
बड़ जकरी कार्यक्रम खनि रहल छैक । आइ काहि सभ  
छोड़ा सब पड़ा-पड़ा कऽ बस्नइये जाइ-ए ।

बूढ़ : नै हजूर ! हमर बेटा तेहन नै है ।

बोसर लोक : अच्छा बाबा, बड़ साधु छऽ तोहर बेटा तँ जा मे लकड़क  
ग ने । खरि छपाबऽ एखबारमे ।

बूढ़ : एखबारमे त बहुत सँया लै है । ओतेक टाका हम कहाँ  
पावी बाबू । कहाँ स लाउ ?

सावरिया : त रेडियो टीसन आ ओहीमे सूचना प्रसारित करवा बहक ।  
मुनै छियै ओतऽ सँया नहि लगैत छैक ! ओतहि जा ।  
एतऽ सँ मुदा जल्दी हउऽ । किएक तँ एतऽ बड़ जकरी  
प्रार्थना सभा मेहो होमऽ बला छैक । बहिक इहुरि कऽ तोहूँ  
ओहिमे भाव लवए लए पाछी जहहऽ रेडियो टीसन ।

बूढ़ : ओतहि स त आवि रहल छी सरकार । ओतऽ कहलक जे  
ई कारम (कारम देखबैत) भरबाऽ कऽ आनऽ । ई छियै  
अंगरेजी बहादुरक कारम । हम पढ़ल मे लिखल । कतेक  
लोक केँ मोड़ हाथ धयलीं त एक मोटय ई कारम भरि  
बेलनि । नऽ बेलियै एतेक परचण्ड रोवमे । खनि नहि  
होअब बातमे तीत ठियाँ बैसैत पहुँचली रेडियो टीसन ।  
बेलियै । त ओ साहेब ऊनटा-पुनटा कऽ देखलकै आ' घुरा  
देख केँ एकरामे थाना का मोहर कतऽ है ?

पहिल युवक : देखी बाबा कारम । ( ल' कऽ देखैत ) समस्या हिन्दुस्तानी  
आ' कारम अंगरेजी ।

बूढ़ : हमरा की मालूम जे एकरामे थानाकेँ मोहर लगावऽ पड़ैहै  
ओकरा लखमे कारमे दै बेरी कहि देब उचित नै छल ?  
हम बूढ़ लोक विपत्तिक मारल । कतेक फिकियेनी ओ  
नहिदेँ टा मानलक । की करिणी ? केन मोड़ बिसियबैत  
नंगड़ावत थाना पुलिस कतऽ । के मुनैहय ? गरीबक बातकेँ  
के मुनै है बाबू ?

पहिल युवक : की भेल, थाना पर की भेल ?

बूढ़ : मोहर दै ते कहलियै त बाजल जे मोहर मंगसीमे मिलै है  
बूझ ? थानाक मोहर है कि थानी दोकानक ? आनऽ  
वीत गो खँवा लखन कारम पर मोहर लगवबऽ ।

पहिल युवक : ( सहायुभूति आ' क्रोध सँ ) तखन केर ?

बूढ़ : की होइनी अच्छा । हमरा लग त खाइकेँ पाइ छैहै ने कहाँ  
स दितिअइ ? ( ओ लगभग बहोर, लामि कऽ कानऽ  
लगीत छैक । लाल कात बाग्रा उन्मीय सँ देखैत छैक  
आ धाकि कऽ ओही ठाम बैसऽ लगैत छैक )

दो एक मोटय : किएक तपत्ता भेल ? एतेक दा बेटा अखि बाबा अहाकेँ ?

बूढ़ : ई दोसरका बेटा छेलै । बड़ तेजगर । सब मुश्की सब  
ओकर परसँसे करै छेलै । कोलेज गेलै आ ओर दिनसँ ओ  
कहाँ गेलै ते पतेने कयल । हा भगवान !

दो एक मोटय : आ अहाकि दोसर बेटा ? (सावरिया आ' बोसर लोक  
ओकर एहि बातमे खोसा रहल छैक आ क्रोधित छैक)

बूढ़ : (जोरसँ ताम धीबैत) ओऽ ? ओ त जेहे जे पीहतरिमे  
भेल छेलैहै । इस्कूल कोलेज सबमे बम्बूक चलल छेलैहै  
तहीमे ओकरी बम्बूकलगा देलबै (कतीक घाम करैत जकाँ)  
हमरा सब त ओकर मुहँ मे देखि सकलियै घुरि कऽ ।  
ओकर माथ गाम जकाँ हुकड़ि हुकड़ि कऽ घाम लऽ देखी ।  
हमरा सब ओकर मुहँ कहाँ देखलिये घुरि कऽ ( ओ कानऽ  
लगीत छैक )

बोसर लोक : ( जेना एही अवसरक ताकमे हो आ' एकर ताम उठवैत  
बाजऽ लगैत छैक ) हँ ! देखि कियो समाजक लोक ! देखि  
रहल छियै अन्धकार पराकाष्ठा ! कतीक बापसँ ओकर  
बेटा बिछुड़ि गेलैक । गोली खायलक । जाम देलक । तँयो  
हमरा अहाँ, सबकेँ ई लोकनि बोले भरोस दैत छथि ।  
आएवाहन जे चिन्ता, दुख आ घबड़वबाक बात नहि । पैघ-  
पैघ सामाजिक क्रान्तिक दौरमे, महान परिवर्तन पावाये



ई सब होइतहि छैक। (यूद्ध के एक दिस इकारा करैत कहैत छैक) ओम्हर जगस ठाढ़ भऽ जा। हमर भाषण मुनऽ। शान्ति भेटतऽ। चित्त स्थिर हेतऽ।

**बूढ़ :** (फेध आ' लाचारी में) केहन राखल छी यो नेता जी ! बताउ। हम अपन बेटा काक आमल छी आ' अहाँ हमरा भासन सुनबै छी। बोल बैत छी। हए त दिवऽ ने बीस गो दके। कबो दिवऽ। ऐ बुढ़ारियोमे कमा कऽ धूरा देख। दिवऽ ने बीसटा टाका। जाकऽ विबध धाना बला के, आ' कारम पर मोहन दिया क' देखियो स सुनवा दिबै अपना बेटाक मादेमे (अकस्मात जेना आरम जिम्मत होइत) हमर बेटा ! जे कि गुनत-बाहे कत्तहू हो, दौड़ले बलि आवत। ओ बम्है बला नेता नै है। हमरा बहुत मारै है।

**बोसर लोक :** (क्रोधमें) बड़ा मोक्षिक। अरे की अपन बेटा पुराण सऽ का बैनि गेलऽ हौ ? जा ने एक रत्ती कात भऽ जा ने। ककरोकेँ टाका माँगि लए। हम कतऽमें देवऽ ? राहु बता त आगे चल। हमरा लग रईबाक गाछ अछि की ? जा हटऽ एतऽ त'। कार्यक्रम होमऽ रहक। ( गला खणसि कऽ) हँ तँ भाव आ' बहिन बाई....

**बयो एक मोटय :** (बयस में) भारी अकमोच नेताजी। एखन धरि एकहु टा बहीन जी नहि पछारि सकल छथि।

**बोसर लोक :** ( अनिश्चित ) देखि रहल छी आदमीक हालाति ? माजो-जालमें बस्तर। एखनहि एहि पिता मुख बूढ़ के अहाँ लोकनि देखलियनि ? देखलियनि बेचारेक दुख, विपत्ति आ' लाचारी ? एण्हू टा नहि छथि। समाजमे बहुतो लोक छथि एहन के मरि मरि कऽ आँचि रहल छथि। दिन राति शोषणक महाबलकेँ चिसाईत लीचि रहल अछि। हुनका ज्ञान नहि, शिक्षा नहि....। ते' आवश्यक अछि राजनैतिक समझदारी-जस चेतना। जाहिकेँ कि हमर कष्ट-समस्या बूर भऽ सकय। अहाँ लोकनिकेँ बूझल नहि हएत जे जाहि समाजमे मनुष्यक राजनैतिक चेतना आ समझदारी जतेक

कम रहैत छैक जाहि समाजक जनताक सत्ता-हारा ओतबै बेसी शोषण होइत छैक। ते' हम तखने में, बेर-बेर कहि रहल छी जे हमरा लोकनिकेँ सचेत रहबाक अछि। हमरा लोकनि के जाग्रत रहबाक अछि आ' गिरीह निरधार अतिशय जनताकेँ बुझबाक अछि सबके। सामक ओति-हाराकेँ शहरक निम्नवर्गीक लोक सबकेँ जे ओ अपन अधि-कारकेँ पम्बाक वास्ते डाँढ़क इट्टा आनिह कऽ टाड़ भऽ जाथु। आ' लड़बा लेल तैयार भऽ जाथु।

**बयो एक मोटय :** लड़वा लेल तैयार भऽ जाथु। मुदा लड़थू नहि। (धमकसे) खानी लड़वा लेल तैयार रहथु।

**बोसर लोक :** (क्रोधमें) देखू सभामे उपद्रव पुनि कल। नै तँ अहाँ सन-सन उपद्रवी के ठीक करब अबए हमरा। ( ओ बुनू तीनू दिस एक बेर नजरि बोजवैए आ' जेना अपना आदमी तबके अपना अपना स्थान पर मोस्तैव तेनात बाँधि कऽ निश्चिन्त भऽ जाइत अछि) हँ, तँ हम कहैत रही लड़वा लेल तैयार रह। नहि तँ ई संसार नहि बदलत। हम कहैत छी, हमहीं किएक हमरे अहाँ संसारक सभ महान चिन्तक दार्शनिक सभ सेहो एण्हू कहने छथि जे बिना एकरे नहि हएत समाजक दुख दूर। नहि भ' सकत मनुष्य एहि शोषण-चक्र-चांगुरसँ मुक्त आ ने राजनैतिक चेतना जगयबामे सकय साकांक्षा राजनैतिक चेतना जगयबामे अहाँ अपन मन-मन-धन सब किछु लगा दिवऽ। तखनहि लोकक दुख दूर भऽ सकतैक आ' दुनियाँ बदलि सकतैक।

( ताबतहि माँगिया माइक लग आबिकऽ बोसर लोक के कानमे किछ कहैत छैक। भाषण देनिहारक चेहराक भावसें गुना रहल छैक जे ओकरा भाषण जल्दी अंतम करवा लेल कहि रहल छैक। आ' ओ 'तुरन्त अंतमकऽ रहल छी'— क आइनातत वऽ रहल छैक मुदा अजिते जाइत छैक। साँवरियाक चेहरा उदास भऽ जाइत छैक। ओ बेर-बेर



अपन गरवति हुंघोधि रहल अछि, जेना कि ओकरा कांछमे कुचकुची उठि गेल होइक)

सोसर लोक : हे त भाय लोकनि ! सबसँ बड़का बस्तु होइत अछि राजनीतिक जुझारुपन । राजनीतिक ज्ञान । आ' से ज्ञान जनताक श्रीच बढायब....

(अनकोके मे साँवरिया साइकल खरिद लेल छैक । कनौक झोका-तिरी मेहो होइत छैक बुनमे अगतः माइक साँवरियाक हाथमे आबि जाइत छैक ओ जहदी जहदी बाजस लगैत अछि)

साँवरिया : (हठबडावल सभ कमे) बड़ भ' गेल सोता लोकनि ई नेताजी तँ पुरा समय सोछि गेलखिन । अही दुबारे, पहिने सँट्रबट भऽ गेल छलैक । तँको ओ एकरा नहि निबाल्लनि । यो जिम्मेदारी बुझब मे करैत छैक तँ । अहाँ लोकनि अनिते छी जे एखन अपना सभक मोलामे-बलैक पैस उत्तर-दायित्व आओर पुनीत कर्तव्य डाङ्ग अछि ? अपने लोकनि सभ सोटव इहो जनैत छी आ' धिन्तासँ बसाह भऽ रहल छी जे हमरा लोकनिक महान नेताजी बडा अस्पतालमे अव-तल हासत मे अस्वस्थ छथि । बहू आत्मा जे देशबासी लोकनि के भयानक महा निशाक महासुधारमे प्रकाश प्रदान कयलनि । हमरा लोकनिके समूह बनौलनि । आ' खराबी तथा भ्रष्टाचारमे लड़वाक नैतिक अनित प्रथन कयलनि । एहेन युग पुरुष । अपन एहेन अमर नेता आई मरि रहल छथि । तिनके बीघाँमु बनसवाक लेल हमरा लोकनि सब गोठय एतऽ सामूहिक सामरिक प्रार्थना करवाक लेल एकट्ठा भेल छी । एही उद्देश्य तँ जे हुनका प्राण-रक्षा भऽ सकनि—हमरो लोकनिक औदा हुनका भेटि सकनि । तबमेव माता प पिता तबमेव... (पाठ करैत)

यो एक गोठय : मुदा ए' बी भाय साहेब, जखन अहाँक महान नेता अपने अमर छथि तखन हुनका प्राण रक्षा लेल एतेक रात लोकके व्याकुल भऽ कऽ प्रार्थना करवाक की जरूरति ? अमरके

तँ अहाँ होइत छैक जे मरय नहि । ई तँ ओहूमे नहि मरताह । अहाँ कियेक मरल जा रहल छी हुनका लेल ? निश्चिन्त रह ।

साँवरिया : (बीघसँ बेचैत) बड़ नास्तिक बुझाइत छी यी । एहम नास्तिक स्वर ! हा नदर नागर ! एहने अनारवावावी चरित्र सभ मिलि कऽ हमर संपूर्ण राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक आ' सांस्कृतिक मूल्यके ध्वस्त कऽ गेलक अछि । एह लोक सब संस्कृतिक शत्रु होइत अछि । हमर महान नेता एहने संस्कृति-विरोधी घमिस्त विरुद्ध हमरा लोकनि के एकजुट होवऽ आ' एकरा तँ लड़वाक मार्ग प्रशस्त कयलनि आ' तकरा अपना चरित्र बल सँ आलोचित इजोत कयलनि । युग-युग धरि हुनका ई राष्ट्र-सेवा हमरा लोकनिक पथ प्रदर्शक बनल रहल । (बैतघैत जकाँ ओहि पृथक बिस संकेत करैत) एहम लोक संघसँ हमरा लोकनि के बैतल रहबाक चाही पीपीसो बंटा (तखने जेना केरो ओकरा अपन रोगी नेता मन पड़ि जाइक । भवित भाव सँ ओ आँखि मूनि लैत अछि । हाथ जोड़ि कऽ ऊपर उठा लैत अछि, आ' व्याकुल भऽ थजैए) ईश्वर ! हिनका, हमरा सज्जे रहबा लेल सदा सर्वदाक बारछे छोड़ि दियनू जाहिसँ कि हमर जीवन-पथ, हिनक उपस्थितिसँ शुभ-प्रकाशमे आलोकित रहय । ई सदा हमरा लग रहथि ।

यो एक गोठय : तँ की, अहाँ अमर छी प्रार्थना-पुरुष जी ? नहि तँ कीना रहि सकब बुनू गोठय सदा सर्वदा संग, अपने लोकनि ?

साँवरिया : (बिसियाइत) अहाँ लोकनिमे एकहुँ रती बिष्टाचार आ' मर्यादाक संस्कार नहि अछि । धिक्कार अछि । कहू भला ! अहाँ लोकनि एतेक टा पुण्य कार्यक लेल एतऽ उपस्थित छी आ' अहाँ बाण जकाँ अपना वचन चला-चला कऽ हमर ई भल छष्ट करऽ चाहैत छी ? हिसाफ बाताधरण करऽ चाहैत छी ! अहाँ लोकनि तँ सत्यः बुझाइत छी जेना भवि-



मुनिक घबराहट-मग्न होइ आ' उपद्रव उत्पात मचा रहल होइ । अस्तु जे हो ( मस्तर पड़ैत छैक )

छमा बरन को चाहिये,  
छोटन को उपपत्ति ।

भाइ लोकनि, बहिन लोकनि आ' अन्धान्ध सञ्जन बन्द ! आयुक ई उपपत्ति हुनकहि खातिर थिक, अपन अमर आश्वत अस्वरथ नेताक स्वास्थ्य लाभक प्रार्थनाक हेतु । आइ एतऽ हमरा लोकनि भगवानसँ अपन ओही महान् नेताक औषधी मागऽ, सामूहिक प्रार्थना करबाक सकलप लऽ कऽ एतैक बेसी सङ्ग्रामे उपस्थित भेल छी । प्रार्थना करबाक लेल । (ओकर एहि घोषणाक) एहि बेर पञ्चक गण एक दसराक पुङ्ग ताक' लगैत छैक जेना सब सोचि रहल हो, बेश सूर्य बनाओल गेन । ताही बीच एकटा जोरगर आवाज श्रवैत छैक)

बघो एक गोठप : नहि-नहि प्रार्थना करऽ नहि, हमरा सब नाटक देखऽ आयल छी, नाटक !

बघो दोसर गोठप : हमहूँ नाटके देखऽ आयल छी ।

कएक स्वर : (एकहि सङ्ग) हमहूँ नाटक देखऽ आयल छी ।

हमहूँ हमहूँ हमहूँऽऽऽ

हमरा लोकनि तब गोठप नाटक देखऽ आयल छी ।

एक स्वर : चलो भाय ! आब नाटक चालू करू । (फेर तखने हल्ला उठऽ लगैत छैक—“नाटक शुरू करू, जल्दी नाटक शुरू करू ।”)

(एही बीच भीड़नं नेता निकलि गेल रहैत छैक । आ किछुए तत्केरक भीतर, पाछाँ दिससँ खूब जोर सँ आवाज आबऽ लगैत छैक ‘भागै जाइ भागै जाइ । पुलिस आबि गेलैक । सब गोठप एतय’ पड़ाइ जाइ । भागि जाइ जाइ एतय’ । ई पब्लिक थ्येस छैक, अग्रान्त नहि करियौ । हटू

भागू एतय सँ । एतऽ ई सब किछु नाहि हँसबाक चाहौ । भागू एतयसँ... बलका नहि करू, पुलिसक सीटी बजय-बाक ध्वनि अबैत छैक आ' सँह स्पष्ट फेर कहऽ लगैत छैक—भागै जाइ । लाठी चार्ज हुएत...एक मिनटक समय लेल जाइत अछि तकराबाद लाठी चार्ज । पुलिसक सीटीलगातार बजैत छैक । भगदड़ मचि ज इत छैक ।

एही भाना-भानीमे कात दिस बँसल वृद्ध के धक्का लगैत छैक । ओ सम्हरैत उठैत अछि आ लग सँ जाइत एक गोठप के घुँछैत छैक)

वृद्ध : हमर बेटा कोना मिलतै बाबू ?

(ओ व्यक्ति ओकर उपेक्षा करैत चलि जाइत छैक । वृद्ध दुःखी आ' अनिश्चित जकाँ ठाढ़ रहैत अछि । ताबत ओकरा दिस ‘पहिल लोक’ अबैत छैक । ओकरो सँ बड़ आत्त' भावै घुँछैत छैक)

वृद्ध : आव हमरा बेटा द रेडियोमे के बोलतै ? हमर बेटा कोना मिलतै बाबू ?

पहिल लोक : ( वृद्धक बौंहि रनेह सँ धरैत कहैत छैक ) चित्ता- नहि करू बाबा ! हम सब अहाँ सङ्गे अपना कोतवाली जलैत छी आ' ओतऽ सँ चलब आकाशवाणी ।

(तकरा बाद बेरा बेरा सब अभिनेता, वृद्धक बुलू कात जमा भ' जाइत छैक मुदा ओहिमे ‘सचरिया’ ‘दोसर लोक’ तथा ‘अफसर’ नहि छैक । सब कलङ्कार वृद्ध के आगाँ लऽ चलेत सामूहिक स्वरमे गाबऽ लगैत छैक)

“आबहु सब मिलि रोबहु भारत भाई,

हा हा ! भारत बुद्धिमान देखी जाई ।

□ □